Chapter-3

तृतीय अध्याय अः–

गुजरात के मध्य कालीन सन्तों की गुरु शिष्य परंम्परा एवं गुरुतत्व निरूपण

प्राचीन काल से ही गुजरात सन्तों –महंतों और ऋषि–मुनियों की तपोभूमि रहा है । चाहे उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत ,देश के कोने में होने वाली उथल–पुथल क्रांति तथा आन्दोलनों का प्रभाव गुजरात पर भी पड़ा । ठीक उसी प्रकार धार्मिक सहिष्णुता गुरु शिष्य परंपरा में पनप रहे ज्ञान भक्ति और बैराग्य का पूरा प्रभाव गुजरात की भूमि पर पड़ा है । जिसे पहले स्पष्ट किया जा चुका है ।

नाथ संप्रदाय में गुरु शिष्य परंपरा का निर्वाह पूर्ण रुप से देखा जा सकता है । इस पंथ के प्रवर्तक भगवान आदि नाथ शिव को सद्‌गुरु कहा गया है । गुजरात में गुरु शिष्य की परंपरा सोलंकी काल के राजाओं के समय में प्रतिष्ठित थी । नकुलीष धर्म राज्य द्वारा प्रतिष्ठित था । नर्मदा तट की तपोभूमि पर शैवो और कापालिको के गुरु शिष्य – परंपरा के मूलभूत तथ्यों को आज भी खोजा जा सकता है । आज भी नर्मदा के तट पर शिव मंदिरो की श्रृंखला देखने को मिलती हैं । इससे यह ज्ञात होता है कि बारहवीं और चौदहवीं शताब्दी में शैवों की शाखाएँ –प्रशाखाएँ फैली हुई थीं । गुजरात के सोमनाथ भुवनेश्वर रूद्र–महालय जैसे विभिन्न शिव मंदिरो मे हुई लूट के कारण शैव उपासक इधर–उधर भागने लगे । शैव साधना की कला शाक्तों का भी गुजरात में उतना ही स्थान रहा है ।

शिव पार्वती की पूजा आज भी होती है । बहुचरा, अंबिका पीठ तथा पावागढ़ का काली मंदिर इसका प्रमाण है । गुजरात का गिरनार प्रदेश तो शैवों और शाक्तों की तपोभूमि है । गुरू दत्ता त्रेय के चरण चिन्ह कक्ष के

काला पर्वत पर पड़ा था जो आज भी उसी तरह पूजा जाता है । धरेन्द्रनाथ जो मतसेन्द्र नाथ के शिष्यों में से एक थे। जो सौराष्ट्र से होते हुए कच्छ पधारे थे। कच्छ में इनका आगमन आठवीं शताब्दी माना जाता है। कच्छ में इन गोरखपंथी साधुओं को पीर कहकर संबोधित किया जाता है। अन्य साधुओं में सरणनाथजी,गरिमनाथजी तथा कण्ठडन्नाथजी का नाम उल्लेखनीय है।

गुजरात में कुछ ऐसे संतों का भी आगमन हुआ जिनका कार्यक्षेत्र दूसरे प्रदेशों में रहा। उदाहरण के रूप में स्वामी चकधर का नाम उल्लेखनीय है। कुछ ऐसे संत भी हैं जिनका जन्मस्थान इतर प्रदेश रहा है और कार्यक्षेत्र गुजरात रहा है। उदाहरण के रूप में पीपाभगत और मीराबाई का नाम उल्लेखनीय है। कुछ ऐसे भी संत हैं जिनका का जन्मस्थल और कार्यक्षेत्र इतरप्रदेशों में होते हुए भी वे गुजरात प्रदेश में छा गये जैसे कबीर,रैदास आदि। संतों की प्रवृत्ति सदा से ही घुमक्कड़ी रही है । गंगा की लहरों की भाँति किनारों को तोड़ स्वच्छन्द बिहरने वाले रमते जोगी थे। इन सन्तों से भारत का कोई भी कोना अछूता नहीं रह पाया हैं। गुजरात के ऐसे सन्तों के जीवन एवं कृतित्व का परिचय जिन्होंने साधना के साथ अद्‌भुत सत्य को वाणी के माध्यम से व्यक्त किया। गुजरात के अधिकांश सन्तों ने साधू भाषा (हिन्दी) तथा गुजराती दोनों भाषाओं में अपनी रचनाऍं लिखी है।

प्रस्तावना कालीन सन्त कवि (सं 1250 से 1550) चकधरः (सं 1250 से 1330)

महानुभाव सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी चकधर का जन्म भरतस नामक क्षेत्र में (भडोच) हुआ था। तुलसीदास की ही तरह इनके जीवन में भी एक महान परिवर्तन आया, परिणाम स्वरूप ये अपना धर बार त्याग कर समटेक की यात्रा के निमित्त महाराष्ट्र की ओर चल पड़े –1। विदर्भ के गोविन्द्र प्रभु से इन्होंने दीक्षा ली और वहीं इनका नाम चकधर पड़ा–2। चकधर की चौपदी अत्यन्त प्रसिद्ध है। इनकी भाषा मराठी, गुजराती मिश्रित हिन्दी हैं–3।

कबीर साहब :– (सं 1855 से 16 वीं सदी (पूर्व))

कबीर साहब भारतीय सन्त साहित्य के देदीप्यमान आलोक स्तंम्भ हैं। हिन्दी साहित्य की तो ये महान विभूति हैं। इनके विषय में जितना कुछ लिखा गया है वह कम है । कबीर गुजरात के न हो कर भी इनकी वाणी एवं पंथ का प्रचार प्रसार जितना गुजरात में विस्तरित हुआ है उतना कदाचित किसी गुजराती सन्त का भी नही हुआ।

कबीर अपने पंथ के प्रचार्थ गुजरात में आये–4। इनके भ्रमण स्था सूरत, सोरठ, गिरनार इत्यादि रहे। इस संदर्भ में सर्व प्रसिद्व किवदन्ती 'कबीर वट ' को लेकर है कि जीरा और तन्ना नामक दो भाइयों ने सद्‌गुरू की खोज में कबीर को पाया। इन्हों ने कबीर साहब के सम्मुख बड़ की दातुन से वट वृक्ष पल्लवित करने की प्रार्थना की–5। कबीर वस्तुतः धुमक्कड़ और फक्कड़ प्रकृति के मस्तमौला संत थे–6। इनका यही मनमौंजी एवं भ्रमणशील व्यक्तित्त्व इन्हें गुजरात तक लाने में मददरूप सिद्ध हुआ–7। कबीर वट के सामने लिखे हुए संवत्‌ (1564) से यह सिद्व हो जाता है कि गुजरात में कबीर का आगमन इस समय दौरान हुआ। इनके गुरू भी 'रामानन्द जी' ही थे–8।

नरसिंह मेहता :– (सं 1870 – 1536 के मध्य)

गुजरात के वैष्णव भक्तों में नरसिंह मेहता का नाम सर्व मुखर लिया जाता हैं जो कि एक ज्ञानी भक्त रहे हैं–9। इन्हों नें भी कबीर के समान सभी जीवों की एकता में समानता प्रकट करते हुए कहा है कि सब ब्रह्ममय हैं ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। स्वर्ण और स्वर्णा भरण में जिस प्रकार कोई भेद नही, परब्रह्म और जगत के जीवों में भी कोई तात्त्विक भेद नहीं–10। इनकी ज्ञान वैराग्य पूर्ण रचनाओं में कबीर का तुल्य भाव देखने को मिलता हैं। जैसे

नरसिंह मेहता :– ज्यां लगी आतमा तत्व चीन्यो नहीं,
त्यां लगी साधना सर्व झूठी ।

कबीर :— आतम तत्व चीना बिना, सब है झूठी सेव,
करे सो तो भ्रमणा क्या तीरथ क्या देव ।

पीपा :— निर्गुणिया शिष्यों की परंपरा में रामानन्द के शिष्यों में इनका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। डॉ. बड्थ्वाल ने जनरल कलिंघम के मतानुसार पीपा का समय संवत् 1410 से 1460 तक का ही स्वीकार किया हैं—11। उनके मतानुसार पीपा मॉगरौनगढ (राजस्थान) के खींची चौहान राजा थे एवं अपनी छोटी पत्नी सीता सहित रामानन्द जी के शिष्य हो गए थे—12। जनतल कलिंघम ने पीपा जी को जैतपाल से चौथी पीढ़ी में माना हैं—13। कर्लुहर ने इनकी जन्मावस्थ संवत् 1452 बताई है—14। डॉ. त्रिगुणायत कर्लुहर जी के मत से पूर्ण रूपेण सहमत हैं—15। आ. परशुराम चतुर्वेदी जी ने पीपा का समय सं. 1465—1475 के आसपास निश्चित किया हैं—16। इन्हें कबीर का समकालीन भी कहा जाता है—17। पीपा जिस समय अपने गुरू रामानन्द जी के पास गुरु दीक्षा लेने गए उस समय स्वामी (गुरु) जी ने कहा मुझे राजा से कोई काम नहीं हैं। यह आदेश सुनते ही पीपा ने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बॉट दी। आज्ञा होने पर इन्होंने कुए में कुदने का निश्चय करते भी तनिक देर नहीं लगाई जिससे गुरु जी ने प्रसन्न चित्त इन्हें शिष्य बनाते देर नहीं लगाई। गुरू ग्रंथ साहित्य में भी पीपा के पद का संग्रह मिलता हैं, जिसमें पीपा ने 'जोई पिंडे सोई ब्रह्मांडे' के सिद्वांत को प्रतिपादित किया हैं। जो कुछ ब्रह्माण्ड में दृष्टिगत होता है वही पिण्ड में हैं। पीपा उसी परम तत्व को नतमस्तक होते हैं जो सतगुरू बनकर दिखाई देता हैं—18। प्राचीन काव्य विनोद के भाग में पीपा का उदाहरण 'चूंदडी' शीर्षक एक गुजराती पद में उपलब्ध होता हैं—19।

<u>समर्थदास :—</u> (सं. 1550 — 1620)

इनका मूल नाम बंकाजी था। इनका समय काल 1464 ई. से 1564 ई.बताया जाता हैं। 2 समर्थदास का जन्म सिद्वपुर के एक गरीब परिवार में हुआ था।

इनके विषय में ऐसा कहा जाता है कि इन पर किसी मुसलमान हाकिम की कृपा दृष्टि थी जिससे दूसरे मुसलमान चिढ़ते थे। बंसाजी के रूप गुण पर मुग्ध हो कर हाकिम की पुत्री ने विवाह का प्रस्ताव रखा। बंकाजी के सिर पर यह एक बहुत बडा धर्म संकट था। जिसके कारण उन्होंने साधू वेश धारण कर घर का त्याग किया। 20– इन्हों ने सूरत जा कर लोचनदास जी से दीक्षा ली। सूरत के काजी को लक्ष्य बनाकर इन्होंने कुछ पंक्तियां बनाई जिसे 'कुफ्र' कहा है।21– इनको बेहक गाने वाला कहा गया हैं। इनकी भाषा में जावना, आवना, हरावना, पावना आदि कियारुप मिलते हैं। 22– इन्होंने बैराग्य अंग , उपदेश अंग आदि अनेक अंगो के अन्तर्गत ज्ञान तथा बैराग्य से पूर्ण पदों की रचना की हैं। रेखता एवं झूलणा में इनके सुंदर पदों की श्रृंखला मिलती हैं।

'अलख से प्रीत लगाए पियारे।
तोहे यहॉं से एक दिन जावना हैं।।
यही पुर पहन लगे रंग लाल ।
यहॉं बेर ही बेर नही आवना हैं ।।
कुछ नेक सोदा कीजे यार मेरा ।
परवर को नाम मुख गावना हैं।।
'साई समर्थ' कहे सोच दाना।
तू पंछी मुसाफिर पालना हैं ।।

– बैराग्य अंग

शाह अलीगाम धनीः– इनका जन्म अहमदाबाद के संवत् 1571 के आसपास हुआ था। इनके पिता एक सूफी संत थे जिनसे इन्होंने दीक्षा ली थी और धर्म का प्रचार किया था। इनकी मृत्यु संवत् 1623 में हुई थी।

इनके पद आज भी गुजरात के धर्मप्राण जनता में लोकप्रिय हैं। इनकी

भाषा साफ सुथरी एवं स्पष्ट हैं।

कहीं सो मजनू हो बरताबे, कहीं सो लैला हो दिखावे।
कहीं सो खुसरों शाहकहावे, कहीं सो शीरी होकर आवे।।

इनके शिष्य अबुलहसन ने अनेक पदों का संकलन किया था। जिसका संशोधन इनके पोते शाह इब्राहिम "बिन मुस्तफा" ने किया। यह संकलन "जगहर उल असरार" के नाम से प्रसिद्व हैं जिसे गुजरात के लोग दीवान के नामसे जानते हैं।

माधवदास :– (सं. 1601)

माधोदास का जन्म सन् 1545 ई. में हुआ था। इनके पिता केलवड़ा मेवाड परगना के सिसोदिया राजपूत थे। किन्तु ये सूरत में रहते थे। इनके पिता का नाम करवलसिंह था, तथा माता का नाम हीरलदेवी था। माधोदास का युवा अवस्था में सजना नाम की वणिक कन्या के साथ प्रेम हो गया था। माता के उपदेशो से बैराग्य होजाने के कारण शरीर पर भस्म लगा कर "संत समर्थदास" को गुरू बना लिया। इनका लिखा हुआ कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं–23। परंतु कुछ स्फुटपद प्रकाश में आयें हैं। इसमें बहुत से पद अप्रसिद्व भी हैं। इनके द्वारा लिखे गये लगभग 500 पद ,581 कुण्डलिया, कुछ सवैये और रेखते आदि बताये जाते हैं।

संत माधोदास की बैराग्य भावना अतिह्रदय स्पर्षी हैं। किसी चोट खाये ह्रदय की मार्मिक अभिव्यक्ति हैं। इनके पदों की भाषा भी उच्चकोटि की हैं। इनकी भाषा में तख्त, नशीन, जंजीर, बुजुर्ग जैसे अरबी, फारसी के शब्दों का बाहुमुल्य हैं–24।

दादू–दयाल :– (संवत् 1601 से संवत् 1659)

दादू कबीर के तुल्य भारतीय संत साहित्य के एक अनमोल रत्न थे। इनके जन्म जाँति एवं गुरू के विषय में विद्वानों के अनेक मतभेद हैं। कुछ इन्हें राजस्थानी मानते हैं, कुछ जौनपुर का सिद्व करते हैं। परंतु अधिकांश

विद्वानो का मत है कि दादू का जन्म गुजरात में ही हुआ था। परंतु यह भी सत्य है कि उनके जीवन का अधिकांश समय राजस्थान में व्यतीत हुआ था। दादू गुजरात के ही थे। इस बारे में अनेक प्रमाण मिल चुके हैं। दादू द्वारा रचित अनेक गुजराती पद तथा उनकी हिन्दी वाणी में गुजरात के ठेठ शब्दों का बाहुल्य हैं। गुजराती संत साहित्य भी दादू से पूर्ण रूपेण प्रभावित हैं। 25—आचार्य क्षितिमोहनसेन ने दादू का जन्म सं. 1544 ई. अर्थात सं. 1601, फाल्गुन मास की शुकलाष्टमी तिथि बृहस्पतिवार का माना हैं। 26—पंडित सुधाकर द्विवेदी जी के अनुसार दादू का जन्म काशी के पास जौनपुर में हुआ था। 27—

कुछ लोंगो का कहना है कि दादू धुनिया जाति के थे। एवं बारह वर्ष की आयु में अहमदाबाद छोड़ सांभर चले गए और वहाँ से चार कोस की दूरी पर 'नराना' गाँव में रहने लगे। पंजाब के पिंजारे भी दादू के भक्त हैं। इससे यह सिद्व होता है कि गुजरात के संतो का प्रभाव भी पंजाब पर पड़ा हैं। सन् 1603 ई. में 58 वर्ष ढाई मास की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई।

दादू के गुरू कौन थे इस विषय में विद्वानों में मतभेद हैं।'गार्सादतासी' के अनुसार दादू रामानन्दी शिष्य परंपरा में छट्ठे नंबर पर आते हैं। जनश्रुति के अनुसार रामानन्द के शिष्य कबीर, कबीर के कमाल, कमाल के शिष्य जमाल, जमाल के शिष्य विमल, विमल के बुड्ढन, बुड्ढन के दादू थे। आ. परशुराम चतुर्वेदी ने भी बुड्ढन या वृद्धानंद को दादू का गुरु स्वीकार किया हैं। 28—परंतु हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने उनको काल का शिष्य माना हैं। 29— दादू के गुरु के विषय में भले ही मतभेद हो परंतु यह स्पष्ट है कि दादू पर कबीर वाणी का पर्याप्त प्रभाव पड़ा हैं। दादू ने किसी जीवित व्यक्ति को अपना गुरु नही बनाया , वे कबीर को अपना मानस गुरू मानते थे। कबीर के प्रति उनकी परम् श्रद्वा थी। 30—

ऐसा कहा जाता है कि दादू ने लगभग बीस सहस्त्र रचनाएँ लिखी थी परंतु इनमें से अधिकांश रचनाएँ नष्ट हो चुकी हैं। दादू की मुख्यतहः पाँच

रचनाऍं निम्नांकित हैं।

1–सन्त दादू और उनकी वाणी– प्रकाशक राजेन्द्रकुमार, बलिया,
2–दादू दयाल की बानी– सुधाकर द्विवेदी, काशी नागरी प्रचारणी सभा काशी।
3–दादू दयाल का सबद – सुधाकर द्विवेदी काशी ना. प्र. स. काशी।
4–स्वावामी दादू दयाल की वाणी– चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी ।
5– दादू दयाल की वाणी –वेल्वेडियर प्रेस प्रयाग।

इनकी बहुत सी वाणियों का संग्रह किया था, जिसका नाम हरडे बाणी हैं।31– डॉ. सुकदेव बिहारी मिश्रने सन् 1902 की खोज रिपोर्ट में दादू कृत 'अध्यात्म कृत्य और समर्थन अंग 'नामक ग्रंथो का उल्लेख किया हैं। 32– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी दादू की बाणी को कबीर की साखी से मिलता जुलता हुआ बताया हैं। इनकी भाषा में गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी का मेल परिलक्षित होता हैं। इनकी रचना में अरबी फारसी के शब्दों का बाहुल्य हैं और प्रेमतत्व की अभिव्यंजना अधिक हैं। दादू की बानी में यद्यपि उक्तियों का चमत्कार नहीं हैं। जो कबीर की बानी में मिलता हैं। पर प्रेमभाव का वह निरूपण अधिक सरस और गंभीर हैं। कबीर के समान खंडन और वाद–विवाद से इन्हें रुचि नही थी। 33–कबीर, नामदेव और नानक की भाँति दादू भी वस्तुतः भारतीय संत साहित्य के उज्वल रत्न थे, जिन्हों ने अपने विचारों को अन्य संतो की अपेक्षा बड़े ही मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया हैं। उन्हों ने साधना के पंथ में सहज मार्ग का अनुसरण किया हैं। इसीलिए उनका ब्रह्म संप्रदाय सहज संप्रदाय भी माना जाता हैं। प्रेम इनके साधना पंथ का दृढ़ संवल था। वह अपने क्षेत्र में एक रस हो चुके हैं। 34– दादू के पद जितने मधुर हैं उनकी साखियाँ भी उतनी ही मधुर हैं। साखियों के अन्तर्गत उन्हों ने गुरु महिमा, नाम स्मरण, प्रेम तथा बिरह को अत्याधिक महत्त्व दिया हैं।

<u>प्यारेदास :–</u> (संवत 1625)

प्यारेदास जी का जन्म सन् 1569 में हुआ था। 35– ये काशी के

रहने वाले थे। कहा जाता है कि काशी में वीरमती नामक वेश्या पर आसक्त हो गए थे। संत माधोदासने इन्हें इस मोड़ से छुडवाया और अपने साथ सूरत ले आये। इनके पदो में प्रेम तथा विरह की व्याकुलता हैं। आत्म निवेदन की अभिव्यक्ति हैं। इनके पद बड़े ही मार्मिक हैं।

ज्ञानी कवि अखा :– (उप. काल सं. 1701–5)

अखा वेदान्त की सर्वोच्च भूमि पर पहुचें हुए प्रसिद्व चिंतक थे। 36– अखा वस्तुतः अनुभव सिद्व आत्म चिंतक, स्वतंत्र ज्ञानी कवि थे। 37–अखा ने अपने अद्वितीय व्यक्तित्त्व से न केवल गुजराती साहित्य को अपितु संपूर्ण विश्व साहित्य को पर्याप्त रुप से प्रभावित किया हैं। इन्हें गुजराती काव्य का अक्षय श्रृगांर भी कहा गया हैं। श्रीमन सुखराम मेहता ने अखा को ड्राइडन की उपमा से विभूवित किया हैं। सच तो यह है कि गुजरात में ज्ञानवाद की परंपरा को अखाने अक्षुण्णे बनाया। गुजरात के समस्त मध्य युगीन साहित्य में अखा का स्थान अप्रतिम हैं। ज्ञान के संधान में इन्हों ने अपने आप को खो दिया और दूसरो को इस पद की सुलभता पैदा कर दी। अखा की "ज्ञान चुंनरी का रंग"न केवल कविओं पर चढ़ा अपितु समाज के प्रत्येक मनुष्य पर चढ़ गया। अखा को गुजरात का कबीर कहे तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। इनकी वाणी भी कबीर की तरह जीवन के कटु अनुभवों की स्पष्ट अनुभूति हैं। डाटँ फटकार और अक्खड़पन में तो इन्होंने कबीर को भी मात कर दिया हैं। 38–बीस वर्ष की अवस्था में पिता के बिछोह पत्नी एवं छोटी बहन के अकाल मृत्यु ने अखा के ह्रदय पर गहरी चोट पहुँचाई। अखा का मन इस संसार से उठ गया और सद्‌गुरू की खोज में वे निकल पड़े। सद्‌गुरू की खोज में वे घूमते हुए गोकुल गए यहाँ उन्हों ने वल्लभाचार्य जी के चौथे पुत्र गोकुलनाथ जी से दीक्षा ली।39– भक्ति मार्ग में गोकुलनाथ जी के साक्षात्कार का उल्लेख भी अखा ने किया हैं।40–

अखा ने स्वयं को कवि न कहकर ज्ञानी कहना अधिक उचित समझा

हैं। अखा सच्चे अर्थो में ज्ञानी कवि थे। उन्हों ने जो कुछ भी कहा हथोड़े की चोट पर कहा। अखा को शंकर वेदांत का भी ज्ञान था। कर्मकांड और उनके काव्य में कर्मकांड और रूढियों का डटकर विरोध किया हैं। वह एक युग दृष्टा पुरुष थे। उन्हों ने हिन्दी और गुजराती दोनो भाषाओं मे काव्य की रचना की हैं। उनके द्वारा लिखे हुए ग्रंथो के नाम इस प्रकार हैं।

गुजराती रचनाएँ:—

1) अखेगीता 2) पंचीकरण 3) चित्त—विचार संवाद 4) छप्पा 5) कक्का 6) सातवार 7) अनुभव बिन्दु

8) गुरू—शिष्य संवाद 9) कैवल्यगीता 10) सोरठा 11) बारहमासा 12) अवस्था निरूपण

हिन्दी रचनाएँ:—

1) ब्रह्मलीला 2) संतप्रिय 3) जकडी 4) झूलणा 5) कुडलियाँ 6) एक लक्ष रमैनी 7)साखियाँ

8) भजन 9)पद 10) धमार 11) विष्णुपद।

गुजराती की कविताओं मे अखेगीता और अनुभव बिन्दु सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ मानी जाती है । उसी प्रकार हिन्दी में भी 'संतप्रिया' और 'ब्रह्मलीला' लोकप्रिय हैं। संतप्रिया अखा की प्रथम हिन्दी रचना हैं। संतप्रिया की मूल हस्तप्रतियाँ बंबई की फारबरस लायब्रेरी तथा बडौदा विश्वविद्यालय की गुजराती विभाग के विद्वान डॉ. योगेन्द्र त्रिपाठी के पास सुरक्षित हैं। अखा ने गुरू महिमा के साथ ही इस ग्रंथ का प्रारंभ किया हैं। 'अक्षय रस' की भूमिका में श्री कुवरचन्द्र प्रकाश जी ने इसी तरह की गुरू प्रणाली को उदधृत किया हैं। जिसे उन्होनें सागर महाराज जी की डायरी से उदधृत किया है । कुछ लोगों ने अखा की रचनाओं में ब्रह्मानंद शब्द को ढूढ़ ढूढ़ कर ब्रह्मानंद को ही अखा का गुरू सिद्व करनें का प्रयत्न किया हैं ,परंतु अखा की रचनाओं में उसका उल्लेख नही मिलता । अखा की रचनाओं में सच्चिदानंद, सहजानंद, निरंजन, महानुभव आदि अनेक

ऐसे शब्द मिलते हैं, जिससे हम अखा का गुरु समझ बैठने की शंका उठा सकते हैं। अखा ने आत्मा को ही आत्मा का गुरु बताया हैं। उन्हों ने स्वयं ही ब्रह्म का अनुभव किया था। इस प्रकार देखा जाएँ तो अनुभव की बाती से आत्मा का दीप जलानेवाले संतो में अखा अद्वितीय थे। 'अखेगीता' में भारतीय षष्ट दर्शनो के सिद्वांतो का निरुपण हुआ हैं। इनके ब्रह्मलीला एवं संतप्रिय ग्रंथो में अद्वैत सिद्धांत का निरुपण हुआ हैं। इनके 109—झूलणा पदों में खालिक के खेल की चर्चा की गई हैं। वेदांत एवं सूफी दर्शन की संत समन्वय की परंपरा में निसंदेह यह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। शरीयत, तरीकत, हकीकत, मारीफत को लाँघ कर 'बासिलेहक' की तमन्ना अखा ने अपने प्रेमपंथ में सूचित किया हैं। अखा की 39 कढ़ियाँ अब तक प्रकाश में आई हैं। मिलन की भावना से ओतप्रोत इन जकडीयो में अखा की आत्मा कभी युग युग से तपते हुए चाँद को देखती हैं—41।

कभी पचरंगी चोला पहनकर सैयां के साथ खेलने को उनकी आत्मा रुपी सुहागिनें मचल उठती हैं। अनुभूति की तन्मयता अखा की जकडीयों की सबसे बडी विशेषता हैं, इसी प्रकार अखाकृत 25 हिन्दी कुंडलियाँ तथा 34 हिन्दी भजनों का संग्रह अक्षयरस में मिलता हैं। काव्य सौन्दर्य तथा भाषा के गठन की दृष्टि से अखा जी की कुंडलियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। अखा के पद उनके अनुभव एवं आत्म ज्ञान के निरंतर महकते हुए 'कमल पुष्प' हैं। डॉ. मुन्शी ने इनकी वाणी को युग की यथार्थ अभिव्यक्ति कहा हैं। इनकी मुक्तक रचनाओं से ही ये स्पष्ट हो जाता है कि ये इनके ह्रदय की ही स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जिसमें इनके कला एवं ज्ञानका सुलभ संयोग स्पष्ट होता हैं।

गुजरात के संतो में अखा का वही स्थान हैं जो उत्तरभारत की संत परंपरा में कबीर का हैं। इसी कारण अखा को गुजरात का कबीर कहा जाता हैं। 42— यही नहीं उनके परवर्ती संतो ने भी अखा का अनुसरण किया हैं।43—

नरहरि :– उप काल 1672 से 1699

अखा के समकालीन होने के कारण नरहरि भी इसी ज्ञानमार्गीय शाखा के ज्ञानी कवि थे। सुरेश जोशी ने नरहरि को बावला का कड़वा पाटीदार बताया हैं।44– इनके गुरू का नाम ब्रह्मानंद था। इनकी कुल आठ रचनाएँ प्रकाश में आई हैं जिनमें 'ज्ञानगीता' 'गोपी' 'उधव संवाद' 'हरीलीलामृत' 'भक्ति मंजरी' 'प्रबोध मंजरी' 'कक्का' 'मास' 'संत ना लक्षण' आदि प्रमुख हैं। इनकी रचनाओं का प्रमुख उद्देश्य गुरू गोविन्द के महत्त्व का मान और भक्ति ज्ञान वैराग्य का प्रतिपादन करना था। इनकी पदों की भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है। इनकी रचनाओं की कुछ हस्त प्रतियाँ महराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय के ओरियन्टल इन्सटीटयूट में उपलब्ध हैं।

गोपालदासः– उपकाल संवत 1705

ये अखा के समकालीन कवि थे। 'अखे गीता' और 'गोपालगीता' के रचनाकाल में श्री के. का. शास्त्री जी ने डेढ मास का अंतर बताया हैं। 45– इन्हों ने 'अखेगीता' की देखादेखी अपनी पुस्तक का नाम 'गोपालगीता' रखा हैं। इनके गुरू का नाम 'सोमराज' था। 'वेदांत' को पचाकर मात्र भाषा में अभिव्यक्ति का यह दूरूह कार्य अखा के समान कौशल्य एवं कवितापूर्ण न होने पर भी गोपाल ने सफलता पूर्वक निभाया हैं। 46–
भाषा की दृष्टि से इनके पद सरल है इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है। रासलीला, कृष्णभक्ति एवं सत्संग महिमा के पदों की रचना 'दासगोपाल', के नाम से प्रसिद्ध है।

लालदास :– उपकाल 18 वीं सदी पूर्वार्ध

ये वीरपुर के निवासी छीपा भावसार थे। इन्हों ने अखा को अपना गुरू माना है। 47– इनकी वाणी में अखा की भाँति गुरू गोविन्द की एकता अनन्य भक्ति तथा ज्ञान का उद्‌घोष हैं। इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी हैं।

प्राणनाथ ÷ उप .काल , संवत 1675 से 1751 तक

भाषा संस्कृति तथा धर्म के क्षेत्र में स्वामी प्राण नाथ अपने समय के मौलिक विचारक थे। धर्म एवं संस्कृति के जिन आदर्शो का अनुसरण युग पुरूष महात्मा गाँधी किया उन सभी की प्रस्थापना स्वामी प्राणनाथ प्रायः 300 वर्ष पूर्व कर चुके थे । डा. बडथ्वाल ने अपने शोध ग्रंथ इनका संक्षिप्त परिचय देकर समीक्षको का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। 48– ये जाति के क्षत्रिय काठियावाड निवासी थे। इनका जन्म संवत्1675 में हुआ था। 49–'निजानंद चरितामृत' के आधार पर इनका जन्म नवतनपुरी जामनगर में संवत् 1675 अश्विन मास की कृष्णा चर्तुदशी रविवार के दिन हुआ था।50– इनकी माता का नाम धनबाई तथा पिता का नाम केशव ठाकुर था। 51– संवत् 1687 के आसपास इनकी शिक्षा दीक्षा हुई। डॉ. बडथ्वाल ने इनको विवाहित तथा इनकी पत्नी का कवियत्री बताया हैं। पदावली इस दम्पत्ति की संयुक्त रचना हैं। 52– डॉ. सावित्री सिन्हा ने इनकी पत्नी का नाम इन्द्रावती बताया हैं। 53–

गुजराती में इन्द्रावती नाम से विरचित 54–'बिरह बारहमासी',55– 'ऋतु वर्णन' ' 56–षट् ऋतु वर्णन' संप्रदायिक ग्रंथो के आधार पर ये तथ्य मिले है कि प्राणनाथ जी की दो पत्नीयाँ थी। फूलबाई और तेज़कुवर। निजानंद चरितामृत में ऐसा उल्लेख मिलता है कि वैराग्य उत्पन्न होने पर प्राणनाथ जी स्वामी देवचन्द्र जी के चरणों में जा कर कहने लगे – 'हे गुरुवर, मुझ में कौन कौन से दोष हैं कृपया आप ही मेरा मार्ग प्रशस्त करे क्यों कि मुझे अपनी बुराइयाँ दिखाई नही देती'। इस पर गुरुवर ने शीघ्र ही उत्तर दिया, 'हे महराज जी तुम तो श्री इन्द्रावती की वासना हो और निर्मल आत्मा हो, तुम्हारे अन्दर कोई विकार वास नहीं करता इस बात से तुम निश्चिन्त रहो। 57–

कलश के बाद की रचनाओं में प्राणनाथ जी ने महामति नाम दिया । उनकी पत्नी कविता करती थी या नहीं ये विवादास्पद हैं। उन्हों ने अरबी, फारसी, संस्कृत तथा वेद–कुरान इनजिल आदि धर्मग्रंथो का अध्ययन किया

था। इन्हों ने ईसाई, यहूदी तथा पारसी आदि धर्मो में समन्वय साधने का ही प्रयास किया। संवत् 1735 में हरिद्वार के कुंभ मेले में अपने धार्मिक सिद्वांतो के प्रतिपादन के लिये सर्व धर्म परिषद का आयोजन किया था। जिनमे इन्हें पूर्ण सफलता मिली थी। इन्हों ने ठठ्ठा ,मस्कत, अब्बास, लाठी, लतिया आदि अनेक द्वीपों की यात्राऐं की थी। संवत् 1730 में सूरत में प्रणामी गद्दी की स्थापना की थी यहीं पर उन्होंने कलश नामक गुजराती ग्रंथ की रचना की। स्वामी जी का सबसे पहला हिन्दी ग्रंथ 'सनंघ' बताया जाता हैं, जो कुरान शरीफ के मानव प्रेम एवं दया के पोषक तत्त्वों पर आधारित हैं। 'सनंघ' का रचनाकाल संवत् 1735 माना जाता हैं। गुजरात, हरिद्वार एवं दिल्ली का भ्रमण करते हुए स्वामी जी संवत् 1740 में पन्ना बुंदेलखंड पधारे थे। इनकी उत्तर कालीन रचनाऐं खुलासा, खिलवत, परिकमा ,सागर, श्रृगांर, सिन्धी, मारफत, कयामतनामा आदि हैं। राजा छत्रसाल इनके परम शिष्यों में से थे। ऐसा भी कहा जाता है कि इन्ही स्वामी प्राणनाथ ने पन्ना के निकट किसी हीरे की खान का पता लगाया था। इसी संबंध में डॉ. बडथ्वाल का कहना है कि "मै तो समझता था कि वह खान भगवद् भक्ति थी।"58– महाराजा छत्रसाल ने प्रणामी संप्रदाय के धार्मिक इतिवृत को जानने के लिए प्राणनाथ जी के सुयोग्य शिष्य लालदास जी से 'बीतक' ग्रंथ लिखवाया । स्वामीजी के अन्य शिष्य श्री केशवदास जी द्वारा संवत् 1751 में स्वामी जी द्वारा लिखित ग्रंथो का संकलन किया। जिसमें रास, प्रकाश, षड्ऋतु, कलश गुजराती, कलश हिन्दी, सनंघ, कीर्तन, खुलासा, खिलवत, परिकमा, सागर, श्रृगांर, सिन्धी, मारफत सागर, कयामतनामा, कयामतनामा (बडा), इत्यादि। इनमे से प्रथम चार ग्रंथ गुजराती भाषा में रचित हैं। शेष सभी हिन्दी में लिखे गये हैं। प्राणनाथ का समस्त साहित्य दो भागो में विभक्त हैं। 1) शेषवाणी 2) बेहोशवाणी अखिलप्रणामी समाज श्री मुखवाणी की पूजा करता हैं। तुलसीदास जी की तरह प्राणनाथ ने भी अपनी वाणी का वेद शास्त्र संमत् परम्सत्य आध्यात्मिक वाणी कहा हैं।

'सनंघ' में उन्हों ने कुरान की व्याख्या भारतीय दर्शन के आधार पर की हैं। प्राणनाथ जी सच्चे अर्थो में मानवता के सच्चे उपासक थे। अतः मानव मात्र की समझी और बोली जाने वाली व्यापक एवं सरल भाषा हिन्दोस्तानी को उन्हों ने अपनाया, क्योंकि उनकी दृष्टि में यही एक मात्र समर्थ भाषा थी जो मानव मात्र के हृदय को अंदर और बाहर से निर्मल बना सकती हैं। 59–

प्रणामी साहित्य की शोध खोज के पूर्व प्रायः ऐसा माना जाता रहा है कि खड़ी बोली में गद्य लेखन का प्रारंभ आगरा के गुजराती भाषा भाषी पंडित लल्लुलाल जी के प्रेमसागर से हुआ। किन्तु यह तत्त्व प्रकाश में आ चुका हैं। प्रेमसागर की रचना के 150 वर्ष पूर्व स्वामी प्राणनाथ ने हिन्दी गद्य का प्रयोग कर अपनी भाषा को सर्वप्रथम हिन्दुस्तानी के नाम से अभिहित किया था। इस प्रकार सिन्ध, गुजरात, महाराष्ट्र, मालवा एवं काठियावाड आदि विभिन्न प्रदेशों में भ्रमण करते हुए स्वामी प्राणनाथ ने जहाँ एक ओर सर्व धर्म समन्वय की भावना को जगाया वहीं दुसरी ओर हिन्दी का प्रचार प्रसार किया।

मुकुन्ददास :–

स्वामी प्राणनाथ के पश्चात् प्रणामी संप्रदाय के अंतर्गत स्वामी मुकुन्ददास का नाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्हों ने नवरंग नाम से अपनी रचनाएँ लिखी जिसका संबंध 'ब्रह्मधाम' से जोडा जाता है। इसमें कुल 36000 चौपाइयाँ हैं। इसके अतिरिक्त इन्हों ने मिहिरराज चरित्र, सुन्दर सागर, षट् शास्त्र, लिलीप्रकाश, गीता रहस्य, गुरू शिष्य संवाद तथा फुटकल पदों की रचना की। यें सूरत निवासी थे। इनका जन्म संवत् 1705 के आसपास हुआ था। इनके पिता का नाम राधवभाई माता का नाम कुंवरबाई और पत्नी का नाम सुशीलाबाई था। 25 वर्ष की आयु में इन्होंने स्वामी प्राणनाथ से दीक्षा ली थी। राज्यस्थान में इन्होनें प्रणामी संप्रदाय का प्रचार किया। संवत् 1775 माघ वद दशम को इनका देह विलय हुआ। 60– उदयपुर में आज भी इनकी समाधि मौजुद हैं। इनकी भाषा ब्रज, गुजराती, बुन्देल खंडी मिश्रित हैं।

मुहम्मद अमीनः-- (उपकाल संवत् 1690)

ये औरंगजेब के समकालीन थे। इनका जन्म संवत् 1690 के आसपास माना जाता हैं। 'युसुफ जुलेखा' इनकी महत्त्वपूर्ण रचना हैं। भाषा और शैली की दृष्टि से ये निश्चय ही गुजरात के श्रेष्ठ मनस्वियों (कवियों) मे से हैं। इनकी कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं।

भँवरा लेते फूलरस, रसिया लेते वास।
माली सींचे आस कर, भौरा खड़ा उदास।।

इनका 'युसुफ जुलेखा' न केवल भारतीय कवियों का अपितु भारत के बाहर मुस्लिम कवियों के भी काव्य का विषय रहा हैं।

बली :– मृत्यु संवत् 1764

बली को दक्खिनी और उर्दु के बीच की कड़ी माना जाता हैं। इनका पूरा नाम बली मुहम्मद था। कुछ लोग इन्हें अहमदावादी के नाम से जानते हैं। एवं कुछ लोग औरंगाबादी के नाम से। धर्म और काव्य की तरस लेकर ये सुरत, औरंगाबाद, दिल्ली आदि स्थानों का भ्रमण करते रहें। जीवन में इन्हों ने काफी ख्याति अर्जित की। संवत् 1764 में अहमदाबाद में इनकी मृत्यु हुई।

इन्हों ने रेखता, गज़ल, कसीदे, मस्नबी, रूबाई, तर्जी, बंद आदि की रचनाऍं लिखी हैं। दक्खिनी के कवियों में बली का नाम सर्वोपरि हैं। उत्तर के प्रसिद्व फारसी कवियों ने भी बली की आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण शैली का अनुकरण किया था। दिल्ली के हातिम, फायज, पकरंग आदि अनेक समकालीन फारसी कवि इनसे प्रभावित हुए और देशी भाषा में कविता करने लगे। 61– बली की समर्थ शैली का परिचय हमें निम्न पंक्तियों से मिलता हैं।

जिसे इश्क का तीर कारी लगे।
उसे जिन्दगी क्यों न भारी लगे।।
न होते उसे जग में हरगिज करार।
जिसे इश्क की बेकरारी लगे।।

बली को कहे तु अगर एक वचन।
रकीबों के दिल में कटारी लगे।।

नाथ भवान (अनुभवानंद):– (उपकाल संवत् 1737 से 1856)

इनका समयकाल 1737 से 1856 माना जाता हैं। 62– इनका प्राचीन नाम नाथ भवान था। सन्यास ग्रहण करने के बाद ये अनुभवानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये सौराष्ट्र निवासी वडनगरा नागर थे। 63– जो जूनागढ़ के वाघेश्वरी माता के उपासक थे। 64– इन्होंने गुजराती में सैकडो गरबो की रचना की जिन्हें 'नोरता' के नाम से जाना जाता हैं। इनके द्वारा रचित गरबा, अंबा आनंद इत्यादि अति प्रसिद्व हैं। इनके प्रमुख ग्रंथो में श्री धरीगीता, विष्णुपद तथा चातुरी आदि का उल्लेख हैं। वैसे इनकी रचनाओं में शिवगीता, ब्रह्मगीता, भागवत् सार, चिद्शक्ति–विलास, ब्रह्मविलास, आत्मा स्तवन तथा पद आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। डॉ.सुरेश जोशी ने इनके कुछ गुजराती पदों की समीक्षा अपने अधि निबंध में की हैं। 65– कबीर और अखा की भाँति इन्हों ने भी पूर्ण ब्रह्मकी प्रस्थापना में कहा हैं कि वह न स्थुल हैं न सूक्ष्म, न दीर्घ हैं न लघु, न वह वर्णाश्रम है न धर्म अधर्म हैं। वह तो रूप गुण और कर्म से परे बिना वाणी के बोलता हैं। बिना ऑख के देखता है और बिना पैरो के नृत्य करता हैं और हाथों के बिना तान लडाता हैं। उसके बिना ध्याता,ध्येय और ध्यान सभी निर्मूल हैं। वह तो आकाश की भाँति अविचल और अखंडित हैं। उसे परखने के लिए अनुभव की आवश्यकता हैं। इस विराट ब्रह्म की कल्पना में कवि ने उसे ऊँचा घाट का वासी कहा हैं।ब्रह्माण्ड जिसका सिर हैं, चंद्र तथा सूर्य जिसके नेत्र हैं। जिसके उदर में सातो समुद्र समाविष्ट हैं। जिसके सगुण रूप का इतना विस्तार है उसके निर्गुण रूप को पहचानने की क्षमता किसी दुर्लभ व्यक्ति में ही होती हैं। 66– अखा की भाँति ही इनका कवि हृदय अनुभव और कल्पना के रसावेश से आनंदित हैं। अनुभव के उमड़ते धूमड़ते बादलो में कविका मन मयूर नाच उठता है और अज्ञान की चादर स्वतः सरक पडती हैं।

बरषत अनुभव उमग्यो सावन

जल थल होय रहियो सब हरिया।

लागे खेत सोहावन ।।

अझर भारी लागी हे ताते सरिहे अज्ञान की चादर ।

चिंहु दिस चिरव्यापक नजरावत, हरि हरि धरती पादर।।

सद्गुरू करना करि समझायो नजर बतायो नाजर।

अनुभवानंद आप परपुरन, जब चीन्हे सब हाजर।।

आनंद रूप आत्मा के प्रकट होते ही माया का अंधकार अपने आप नष्ट हो जाता हैं। गुजरात के ज्ञानमार्गी कविओं में काव्यत्त्व की दृष्टि से अनुभवानंद की वाणी आज भी हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। अखा की ज्ञान गरिमा, कबीर का रहस्यदर्शन और सूर की मार्मिकता इस कवि में सहज ही दृष्टिगत होती हैं। कवि की भाषा ब्रज भाषा के अधिक निकट हैं फिर भी गुजराती का प्रभाव उसके हिन्दी पदों पर पड़े बिना नही रह पाया। नाजर ,हाजर जैसे असबी फारसी के शब्द भी इतस्तत प्रयुक्त हुए हैं।

<u>बूटिया :–</u> इनका समय 18 वीं सदी के पूर्वाध में माना जाता हैं। 67–इनके द्वारा रचित कुल 12 पद मिलते हैं। जिनमें इनकी ज्ञान गरिमा का अनुमान किया जा सकता हैं। सत्संग एवं गुरू कृपा से इन्हों ने वेदांत विषय रचना कौशल प्राप्त किया था । इनके पद गोरख संप्रदाय के पदो से मिलते जुलते हैं। 68–

बूटिया के पदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें ज्ञान गगन का दोहन कर रहस्य अनुभूति का पय–पान किया था। उन्होंने विराट ब्रह्मानुभूति की अभिव्यक्ति को सरल शब्दों में बोधगम्य बनाने का प्रयास किया। बूटिया में हमें हिन्दी संस्कारों की छाप मिलती हैं। कुछ हिन्दी प्रयोग वे कर लेते है इसलिये यह वस्तु पकड़ी जा सकती हैं कि इस प्रकार के ज्ञानमार्गी संतो को हिन्दी परंपरा मिली हो।69–बूटिया पूर्व मध्यकाल के अंतिम प्रखरज्ञानी कविओं में से

एक हैं। पूर्व मध्यकाल के कवियों में मुहम्मद चिस्ती,सैयद शाह हाजिम, निहाल, बालम चमार, मुकुंद गुंगली , संत मयूखदास, मोभाराम और देवी तुलजा, धोन तथा रणछोड़ आदि का नाम विशेष रूप से ले सकते हैं। गुजरात के श्रेष्ठ मस्नवीकारों में खूब मुहम्मद चिस्ती का नाम लिया जाता हैं। जिन्होंने 'खूब तरंग' नामक मस्नवी की रचना की। बालम चमार उत्तर गुजरात के निवासी थे जो खाल उतारने का व्यापार करते थे ,किन्तु सुरत के माधोदास के सद्उपदेशो से ये बहुत प्रभावित हुए जिसके परिणाम स्वरूप इन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। चारणी संतो मे ईसरदास का भी नाम उल्लेखनीय हैं। उनके द्वारा रचित एक दर्जन ग्रंथो में प्रायः दस ग्रंथ धार्मिक भावना से ओतप्रोत हैं। जिसमें 'हरि रस 'एक अद्वितीय रचना हैं। जो चारणी शैली के छंदो में योजित हैं। डॉ. मनारिया ने इनकी भाषा को डिंगल कहा हैं। 70–

भाण साहब :– (संवत 1759 से 1811)

भाण के नाम से गुजरात में प्रायः अनेक संन्त हुए हैं । जिनमें कच्छ मांडवी के रहनें वाले गिरनारा ब्रह्माण भाण जी मोहन जी का नाम उल्लेखनीय है । जिनके पांच हिन्दी पदों का संग्रह अध्यात्म भजन माला भाग 2 में मिलता है । 71.– दूसरे भाण दास का उल्लेख गुजरात के आदि गर्वीकार के रूप में श्री के.का.शास्त्री नें किया है । 72.– उन्होंनें इनके पिता का नाम भींम तथा भाई का नाम दामोदर बताया है । आ. अनंत राय रावल नें इनके गुरू का नाम कृष्ण पुरी बताया है । 73, इन भाण दास नें नें हस्तामलक की रचना की थी । इनके द्वारा रची हुयी 71 गरबों की हस्तप्रति भी मिली है । आचार्य रावल नें इनके द्वारा रचित 'अजगर – अवधूत – संवाद' का भी उल्लेख किया है । ये गुजरात के अवधीच्य ब्राह्मण थे । इन सभी नें बाराही के भाण साहब के अनुरूप है । जिन्हें कबीर का रूप भी माना जाता है । सौराष्ट्र के जन मानस में ये आज भी ' सोरठ नो कबीर ' के नाम से जानें जाते हैं । इनका जन्म संम्बत 1754 के आस पास कनखीलोड़ नामक गॉव में हुआ था

भाण साहब के गुरू के संम्बध में कोई प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती ।' लाथा भाई कबीर पंथी को इनका गुरू बताया गया है । 1–भाण साहब किसी एक स्थान पर मठ बनाकर रूके नहीं वे भ्रमण में अपनें चालीस शिष्यों के समूह के साथ यात्रा करते थे । भाड़ साहब के शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी । कृष्ण दास ये कबीर पंथी साधु थे । इन्होंनें चिधानंद नाम के साधू से दीक्षा ली थी । इनके द्वारा रचित तीन ग्रन्थ उपलब्ध है । ज्ञान प्रकाश , यदुनंदन, रघुवंशमणि । इनकी भाषा सधुकड़ी हिन्दी है । जिस पर सुरती गुजराती का प्रभाव है ।

मेकन दादा

जिनको कच्छ का कबीर माना गया है । मानव जीवन् के गहन अनुभव ज्ञान वैराग्य एवं उपदेशों से पूर्ण कच्छी लोक भाषा एवं संस्कारों से रंजित मेंकन की साखियाँ हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है ।

कबीर की तरह मेकनदादा भी एक महान समाज सुधारक थे । जिन्होंने राम और रहीम की एकता पर बल दिया उन्होनें कहा कि सर्वत्र एकही ईश्वर का बास है पीपल के पेड़ मे जो परमात्मा है वही बबूल के पेड़ में भी है । एवं नीम के पेड़ में भी वही है । अल्पायु में ही ये विरक्त हो धर से निकल पड़े थे । दादा की वाणी में सामाजिक अन्धविश्वासो के प्रति विद्रोह है । सैकड़ो स्त्री – पुरूष दादा के शिष्य थे । लालिया नामक गधा और मोतिया नामक कुत्ता भी उनके अनन्य शिष्यों में से एक है । इन्हें रेगिस्तान के करिस्ते के नाम से भी जाना जाता है । संवत 1786 में आश्विन मास , कृष्ण पक्ष चतुर्दशी , शनिवार को दादा नें अपनें बारह शिष्यों के साथ जीवित समाधि ली थी । मेकनदादा नें अपनें पश्चात् अपना स्थान अर्जुन राजा को दिया । लोक व्यवहार के प्रतीकों द्वारा गूढ़ रहस्यों को उभारनें में मेकनदादा की अभिव्यक्ति कौशल प्रशंसनीय है, उनकी भाषा में कच्छी, गुजराती , सिन्धी का अपूर्व मिश्रण है ।

दीनदरवेश : 18वीं सदी उत्तरार्ध से 19 वीं सदी पूर्वाध तक । ये मूलत : पालनपुर के निवासी थे । 'ईस्ट इन्डिया कंपनी' की सेना में मिस्त्री का काम करते थे। गोली लगने से इनकी बॉह कट गयी । कंपनी सरकार नें इन्हें नौकरी से निकाल दिया । वहीं से ये घर–बार छोड़कर साधुओं के साथ भ्रमण करनें लगे ।

अंततः किसी नाथपंथी साधु बाबा बालानाथ को अपना गुरू बनाया जो गिरनार के निवासी थे । इनके शिष्यो में पीरूद्दीन बाबा फाजल संत हुसेन खान बाबा नवीं संत नुरूद्दीन आदि का नाम लिया जाता है । इनकी भाषा खडी बोली है जिस पर पंजाबी तथा गुजराती का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है ।

हासिम अली - (उप. काल सं, 1793)

इनका जन्म बुहरानपुर मध्य प्रदेश माना जाता है । परंतु ये गुजरात के ही प्रतीत होते है । इनकी 'मर्सियॉ' बडी प्रसिद्व है । इनकी 238 मर्सियों का संग्रह दीवान हुसेनी के नाम से प्रसिद्व है । हासिम ने कासिम की वीरगीत , कासिम और सकीना की विदाई कर्बला की निर्मम हत्याओं का वर्णन हुसेन के छोटे बच्चे'असगर' की हत्या का वर्णन 'फातिमा विलाप ' आदि विषयों पर इन्होंने मर्सियॉ लिखी हैं ।

रवि साहब (उप. काल सं. 1783 से 1860)

19वीं शताब्दी के गुजरात के उल्लेखनीय संतो में रवि साहब का नाम आदर के साथ लिया जाता है । ये तणछा गॉव के सूदखोर वणिक थे । संवत 1809 में इन्होंने भाण साहब से दीक्षा प्राप्त की । मोरार साहब इनके प्रिय शिष्यों में सें थे । जाम खंबालिया में इन्हें समाधिस्ट किया गया है । इनके पदों क में रवि जी , खजी ,रविसाहब ,आदि नामों की छाप मिलती है । इन्होंने गुजराती तथा हिन्दी दोनों में काव्य रचनायें की । चिंतामणि ,आत्मलक्ष्य चितामणि ,समगुंजार चिंतामणि ,सतगुरू की कृपा का उल्लेख इनकी रचनाओं

में बार बार हुआ है । भाणगीता ,मनसंयम ,पंचकोश प्रबंध ,रवि भाणप्रश्नोत्तरी ,आदि इनके प्रमुख ग्रंथ हैं । जो गुरूनानक के गुरूग्रंथ साहब और कबीर की साखियों से मेल खाते है ,रवि भाणप्रश्नोत्तरी की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं ।

देख दिलदार दिल मॉही दीदारकर
नाभि के बीच निज नाम है ।
सुरत मुरत शेरी सो जाल दे ,
हृदय कमल मन मार ग्रेहें ।
जलमल ज्योत अनहद बाजा बाजे ।
काम कोघ ब्रह्मम अग्न दहे ।।
बैठिया तखत तब अदल बादेशाही है ।
ज्ञान गुरू गम से मेल हैं ।
दासरविराम ब्रह्ममगन महबूब
पोंचिया संत कोइ सत है ।1।

इसके अतिरिक्त गुरु महात्मा गांधी संबंधी इनके कई पर्द द्रष्टव्य हैं । कबीर की तरह गोविंद से बढ़कर गुरुवों को दर्जा दिया गया है । रवि साहब के सरल एवं संगीतमय पद आज भी मंजीरों की ताल पर गाये जाते हैं । कबीर की तरह रवि साहब की उलट बासियां भी चमत्कारपूर्ण सचोट एवं बौधिक हैं ।

देव साहब –: उप0 काल संवत 1600 –:

साहब कच्छ के संतों में से एक हैं ये जाति के क्षत्रिय तथा हमला गांव के निवासी थे । इनके गुरु के विषय में कोइ उल्लेख नहीं मिलता देव साहब के चक्षु अपनें आप खुले रामसागर , हरिसागर और कृष्ण सागर इनकी प्रमुख रचनायें हैं । रामसागर में निर्गुण ब्रह्म की उपासना है । देव साहब के

चार प्रमुख शिष्य थे

रवीम साहब –::–

ये भाण साहब के पुत्र तथा कच्छरापर की गद्दी के अधिकारी थे भाण संप्रदाय के अनुयायी इन्हें दरिया पीर का अवतार मानते है । इनके द्वारा रचित चिन्तामणि नामक ग्रंथ अति प्रसिद्धहै । अनकी वाणी में मूर्ति पूजा तीर्थयात्रा तथा वह्य कर्मकाण्डों के प्रति खंडन घट में ही गुरु को प्राप्त करनें की अंर्तमुखी साधना का मंडन हुआ है । इनके पदों में गुरु के प्रति अपार श्रद्धा एवं विशुद्धयोग साधना के दर्शन होते हैं इनकी वाणी कबीर की विचार धारा से पोसित है ।

प्रीतम दास –:::– ।–उप0 काल 1775से 1854 – ।

गुजरात के संत साहित्य में जितनी लोकप्रियता अखा क बाद प्रीतम दास जी को मिली उतनीं ही किसी औार को सुलभ नहीं हो पाई । प्रीतम दास के विवाहित तथा अंधा होनें के संबंध में भी अनेक कारण प्रचलित हैं । प्रीतम दास की गुरु प्रणालिका में रामानंद स्वामीं कुवाजी स्वामीं , करसनदास , आत्माराम , भाईदास आदि उल्लेखनीय हैं । इनकी भाषा में अद्भुद माधुरी है । गुरु महिमा भक्त , नामावली , ज्ञान प्रकाश , का पहला पद ब्रह्मलीला साखीग्रंथ विनय अस्तित्व की अंतिम चैपाइयां ,विनय दीनता कुटकल पद ,सप्तश्लोको की गीता आदि इनकी प्रमुख रचनायें है । गुजरात के प्रमुख संतो में गबरी बाई का भी नाम उल्लेखनीय है इनका जन्म संवत 1815 में हुंआ था ।

गबरी बाई –:::' – ये मूलडगर पुर बडनगरा की नागर थीं इनके बढते हुये ज्ञान एवं यश से प्रसन्न होकर राजा शिवा सिंह नें उनकेलिये एक भव्य मंदिर बनवाया था –74। इन्हों नें मथुरा वृन्दावन और काशी की तीर्थ यात्रायें की संवत 1765 में चैत्र शुक्ला नवमीं को काशी में गंगा तट पर गबरी बाई नें समाधि ली । गबरी कीर्तन माला में गबरी बाई के कुल 610 पद संकलित हैं किन्तु संकलन कार नें इसे अपूर्व संग्रह बताया हैं –75।, इन पदों की भाषा गुजराती

राजस्थानी तथा हिन्दी है । निर्गुण के साथ साथ इन्हों नें सगुण भक्ति के पदों की भी रचना की है । जिनमें मीरा की सी तन्मयता दीख पड़ती है । श्री के. का. शास्त्री नें इन्हें गुजरात की कविता लिखनें वाली कवियित्रियों में सर्व प्रथम स्थान दिया है इनके द्वारा रचित तिथियां एवं वार तथा अनेको पदों में ब्रह्म और जीव मन और माया का शान्त एवं मनोहर झरना अविरल बह उठा है । अखाकृत , अखेगीता , की झाकी तथा पदों की झलक हमें गरबीबाई के पदों में प्रत्यक्ष रूप से दिखायी देती है । जो निम्नानुसार है ।

अखा – ज्ञान घटा चढि आई अचानक , ज्ञानघटा चढिआई
अनुभव जल बरखा बड़ी बुंदन कर्म की कीच रेलाई –76

गवरीबाई ::– ,, ज्ञान घटा घेरानीं अब देखो ,
सत्गुरू की किरया भयी मुझपर
शब्द ब्रह्म पहचानी । ।77

जीवण दास ::–

ये अखा जी के प्रिय शिष्यों में से एक थे । ; जीवन गीता इनकी प्रमुख गुजराती रचनाओं में से एक है । हिन्दी में लिखे हुये इनके भजन पद और साखियां उल्लेखनीय हैं । इनकी भाषा गुजराती हिन्दी है एक दूसरे जीवन दास तीसरे संत कवि रवि भाण संप्रदाय से संबद्ध थे । ये जाति के चमार थे इनके पिता का नाम जगाभाई था । इनके पदों में दासी जीवन की छाप मिलती है क्यों कि इन्हों नें ब्रह्मकी उपासना दासी भाव से की है जिसप्रकार वैष्णवी प्रभाव माना जाता सकता है । इनके गुरु का नाम भीम था । इनकी दो पत्नियां बतायी जाती थी । मीरा बाई के पदों की तरह इनके पद भी अत्यंत लोक प्रिय है ।

" मैं मस्ताना मस्ती खेलूँ , मैं दीवाना दर्शन का ,
क्षमा खडग लई भये हों , तु मैं सिपाही हुँ भेदम का
घनन घनन घड़ियाला बाजे ,ताल परवाज अरु मरदंगा
शुन्य शिखर गढ सेन चलावुं ,नाम नचावु नवरंगा " ।78

इनके पदों में कबीर की सी मस्ती है

बापू साहब – गायकवाड–

इनका जन्म संवत् 1835 से 1899 के आसपास माना जाता है –78। ए निरान्त और धीरा के समकालीन थे । ये दोंनो के शिष्य थे प्रथम गुरु धीरा और द्वितीय निरांत । उन्होंने दोनो से शिष्यत्व ग्रहण किया है । इन्होंने हिन्दी,गुजराती में बहुत से पदों की रचना की । इनका बारहमासा वर्णन भी उल्लेखनीय है । जिसमें विरह की अपेक्षा ब्रह्मा अनुभव की मस्ती है । इनके काब्य का मूल प्रतिपाद्य है ब्रह्मज्ञान और वैराग्य।

भोजा के गुरु के संबध में कोई प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती । भोजा के विवाह का भी कोइ ठोस उल्लेख नहीं मिलता वे अजपा जाप करते थे । गुजरात में जहां अखा के छपपा , दयाराम की गरबी , प्रीतम के पद, धीरा की काकियां प्रसिद्ध हैं वहीं उतनें ही आदर और रुचि के साथ भोजा के चाबका भी गाये जाते हैं । हिन्दी में इनका कोई स्वतंत्र ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता परंतु फुटकल पद ही मिलते हैं ।

गुजरात के संत कवियों में मनोहर दास जी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं । इनके जीवन में कुछ घटनायें ऐसी घटी जिससे इन्हें सन्यास लेना पड़ा । सन्यासत होनें के पर इन्हों नें इपना नाम सच्चिदानन्द का निरूपण किया स्वरूप द्वारा मोक्ष की प्राप्ति तथा सद्गुरु की महत्ता पर विशेष बल दिया है अखा और मनोहर स्वामी दोनों ही अद्वैतवादी थे। उन दोनों नें जप ब्रत , सेंवा पूजा , अर्चना धर्म , कर्म , आदि बाह्यचारों का खंडन किया था । अखा की प्रणालिका के ही अंर्तगत जीता मुनि का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है । इनकी वाणी में वेदांत के दर्शन होते हैं इनका जन्म यद्यपि नडियाद में हुआ था किन्तु इनका निवास सीन सूरत के निकट इमरेली गॉव में था इनका आश्रम अंज्तिनी कुमार के सामनें वाले तट पर स्थित है इनके प्रमुख शिष्यों में कल्याण दास , मोहन दास , ब्रह्मचारी आदि का नामलिया जाता है नडियाद के संत राम महाराज को भी इनका शिष्य बताया जाता है इनकी रचना में काफरबोध , साखियां और पद इत्यादि हैं ।

कल्याणदास:::—

ये जीता मुनी के शिष्य थे अपनें गुरु की देखा देखी इन्हों नें भी काफर फोर की रचना की है जिसमें नाम स्मरण का अन्ततः सेधना पर बल दिया है ।

अखा की प्रणालिका के शिष्यों में संत राम महराज का भी महत्वपूर्ण स्थान है ये जीता मुनी के शिष्य थे किन्तु नडियाद की गुरु प्रणालिका में जीता मुनी का कहीं भी उल्लेख नहीं है । न संत राम की परंपरा में जिवित

संत जानकी दास का उल्लेख मिलता है । इन्हों नें संवत 1887 में जीवित समाधि ली थी । गुरु बावनीं के अतिरिक्त उनके अन्य किसी हिन्दी ग्रंथ का उल्लेख नहीं मिलता " गुरुबावनीं " की भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है । जिनमें शब्दों को खूब तोडा मरोड़ा गया है –82 इनकी मुख्य गद्यी नड़ियाद में है अन्य मंदिर बड़ौदा , उमरेठ ,पादरा ,कर्मसद ,कोयली और रढु में पाये जाते हैं । संत राम महराज की शिष्य परंपरा निम्नानुसार है ।

संत राममहराज "सं0 1887 "

लक्ष्मणदास " सं0 1887से 1925तक "

चतुरदास "सं0 1925 से 1941 तक "

जयरामदास "सं0 1941 से 1947तक "

मुगटराम "सं0 1947 से 1961 तक "

माणेकदास " सं0 1961 से 1973 तक "

जानकीदास " सं0 1973 से ——::"

संत राम जी के परंपरा में इस युग के अन्य संतो में भक्ति कवि महान , खोजीराम दास , मूलजी भगत , खुमान भाई , चातक दास , भीम साहब बालक दास , राधोभगत ,कल्याण दास , जगजीवन , जगजीवनदास , माणेकदास का नाम लिया जा सकता है । भक्त कहान दीन दरवेश के ही समकालीन थे । इन्हों नें कुछ हिन्दी कुण्डलियों की रचना की । ऐसा माना जाता है कि सिद्धपुर के कार्तिकी मेले में एक कविता की रचना पूरे दीन दरवेश से इनका विवाद हुआ था –83। भक्त खोजी राम जो कि पूर्वाश्रम में बारामही के मुखिया थे जो भाण साहब के सद्उपदेशों के फलस्वरूप भक्ति मार्ग की ओर अभिमुख हुये , अग्रसर हुये दास नाम से कवि नें हिन्दी में 'ज्ञानमास " तथा " करुणा विनती के कुछ पदों की रचना की है –84। मूल जी भागवत जी भी प्रीतम दास जी के पमान अमरेली के ही ज्ञान मार्गी संत थे इनके कुछ हिन्दी पदों का संग्रह भजनिक काव्य संग्रह में हुआ है –85। खुमान भाई रायघण के पास सादरणी

गाँव के निवासी थे जिन्हों नें बारह वर्ष की आयु में वैराग्य एवं कौमार्य व्रत धारण किया था । इन्हों नें खुमान दास नाम से रचनायें लिखी हैं –86। चातक दास जाति के वैश्य तथा सौरास्ट्र निवासी थे इन्हें प्यास लगनें पर यात्रा के दौरान किसी नें पानीं नहीं दिया उसी के फलस्वरूप इन्हें वैराग्य हो गया इनकी कुछ हिन्दी कुण्डलियां उपलब्ध होती हैं –87। भीम साहब रविभाण संप्रदाय के संत थे त्रीकम साहब इनके गुरु थे । परिचित पद हिन्दी संग्रह में इनके कतिपय हिन्दी पद उपलब्ध होते हैं । 88, भादु दास किसी रामदास के शिष्य थे पद की अंतिम पंक्ति में इन्हों नें अपनें नाम के साथ प्रायः गुरु का नाम भी जोड़ा है । 2, योग साधना इनके पदों के प्रमुख विषय है –89। बालकदास ईडर राह के एक चरण के संत थे जिन्हों नें पिता के उपदेशों से गृह संसार का परित्याग कर वैराग्य धारण किया इनके द्वारा रचित कुछ हिन्दी कुण्डलियां एवं पद उपलब्ध होते हैं –90, राघो भगत भाण साहब के शिष्य थे जो कि वाल्मीकि की ही भांति शुरु में एक लुटेरे थे किन्तु भाण साहब के सत्संग से प्रभावित हो गये थे एक सज्जन बन गये थे । कल्याण दास जो कि डाकोर निवासी थे इनकी हिन्दी ग्रंथ में दो रचनां उपलब्ध होती हैं जिनमें से पहली " छंद भास्कर " एवं दूसरी "रसचंद्र है इनके कुछ फुटकल पद भी मिलते हैं ।91, जगजीवन दास चरोतर निवासी थे जो कि प्रीतम् दास जी के पूर्वगामीं थे इनकी रचनायें ज्ञान गीता, ज्ञानधूल ,एवं नरबोध आदि ग्रंथों का उल्लेख मिलता है –92। एक अन्य जगजीवनदास जो कि सूरत निवासी थे एवं निर्मल दास के प्रमुख शिष्यों में से थे । इन्हों नें जगजीवन विलास नामक ग्रंथ की रचना की जो कि विभिन्न खंडों में बटी हुयी है । 93, माणिक दास जी की जीवन सामग्री अनुपलब्ध है । मो. जे. विद्याभवन अहमदाबाद में में इनके द्वारा रचित आत्म–विलास , आत्मबोध ,कवित्तप्रबंध राम रामायण सत्संगप्रवाह एवं संतोस, गुरतरू , की कुछ हस्त प्रतियां उपलब्ध होती हैं जिनमें से " कवित्त प्रबंध" इनकी प्रमुख रचना हैं ।

—ख—

– गुज़रात के मध्य कालीन संत कवियों का दार्शनिक विवेचन –

गुजरात के हिन्दी संतो के दार्शनिक विचारों की ओर हमारी दृष्टि सहज ही आर्कशित हुये बिना नहीं रहती । गुजरात के संतों की साधना पद्धति उपनिषद और वेदांत के अद्वैतिक – दर्शन से प्रभावित है । सूफियों की प्रेमभावना तथा वैष्णवों की प्रेमलक्षणा भक्ति से जुड़ी हुयी है । इनकी विचार धारा के अंतर्गत योग सांख्य और गीता के कर्मवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है । भारत की समग्र संत परंपरा को प्रभावित करनें वाली प्रमुख दर्शन पद्धतियां जोकि सैद्धांतिक तथा साधात्मक दोनों विचार धाराओं को प्रभावित करती हैं ।

1—:: **अद्वैतवाद**::—

वेदांत दर्शन भारतीय आध्यात्म शास्त्र का चरंम् विकास है 94— आचार्य गौणपद तथा आचार्य शंकर नें अजातवाद एवं मायावाद अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया ।

अजातवाद:— आचार्य गौणपद सबसे पहले दार्शनिक थे जिन्होंनें वेदांत की ब्यवस्थित ब्याख्या की तथा शंकराचार्य के गुरुगोविंद के गुरु के रुप में इनका नाम लिया जाता है ।95, डॉ, त्रिगुनायक नें इन्हें शंकराचार्य का गुरु कहा है 96, विद्वानों की ऐसी मान्यता है कि बौद्ध विद्वान तो थे ही तथा वेदांत की भी स्पष्टीकरण उन्होंनें बौद्धदर्शन के ही आधार पर किया । 97 इनके मतानुसार कोई भी वस्तु कभी भी उत्पन्न नहीं होती । आत्म तत्व के अतिरिक्त अन्य परिमार्थिक सत्य नहीं है प्रत्क्ष प्रपंच भी माया के कारण है । उन्हों नें मायावाद की स्थापना तीन मूल सिद्धान्तों के आधार पर की है :—

1—::— आत्मा,आत्मा के द्वारा ही आत्मा की कल्पना करती है ।98

2—::— अद्वैत तत्व में भेद पैदा करनें वाली शक्ति माया है । 99

3–::– मन ही द्वैत भाव का कारण है ।

गौड़ापाद नें इस माया को अनादि कहा है । 100:: प्रराव मंत्र योग साधना का विषय है । जो कि शब्द ब्रह्म की यह साधना ऋगवेद से चली आयी है । 101::योग सूत्र में तस्यवाचक –प्रसाव– लिखकर ब्रह्म की शब्दररुपता प्रकट की गयी है । 102–

गुजराती काव्य साहित्य में अजातवाद का निरुपण सर्बप्रथम अखा ने किया जिनके तत्वलान की समस्त रचना इसी सिद्धान्त की मुख्य पीठिका पर हुयी है। अखा द्वारा निरुपित अजातवाद का यह प्रवाह हमें गोपालदास ,बूटियों ,लालदास ,कल्यसादास आदि से लेकर संत राम तक को प्रभावित करते हुए परिलक्षित होता है ।

शंकर का अद्वैतवाद जिसे दूसरे शब्दों में मायावाद भी कहा जाता है ।.वास्तव में गौण वाद के अजातवाद से कुछ भिन्न प्रकार का प्रतीत होता है । शंकराचार्य जी के मतानुसार ब्रह्म ही दृश्य जगत का अधिष्ठान है तथा यह दृश्य जगत ही दरसल माया का परिणाम है । उन्होनें वेदान्त सूत्र पर अपने भाष्य में जगत स्वप्न है इसका खण्डन करते हुए जगत की सत्ता को स्वीकार किया है । 103

गुजरात के संतो में अखा की विचार सारणी गौणापद के अजात एवं शंकर के मायावाद दोनों से प्रभावित हुई है । केवलाद्वैत की विचार धारा में अखा की गति आकाश में उड़नें वाले विहंग की भांति दिखायी पड़ती है । इनकी बड़ी ही अद्भुद है । शंकर के मायावाद का चारों रूपों अभासवाद ,प्रतिबिम्ब , अवच्छेदवाद , तथा दृष्टि, सृष्टि वाद का प्रभाव अखा की माया संबंधी विचार सारणी पर स्पष्टतः देखा जा सकता है । शंकर के मायावाद से गुजरात की यह ज्ञानधारा इतनीं अधिक प्रभावित हुई है कि इस विषय को स्पष्ट एवं रोचक बनाने के लिये गुरु शिष्य संवादो के रुप में "हस्तमालक" जैसे स्वतंत्र चिन्तनपूर्ण ग्रंथों की रचना भी की गयी है । शंकर के मायावाद का प्रभाव गुजरात के संतो पर दृष्टिगत निम्नानुसार होता है जैसे

क:— निर्गुण ब्रह्मका प्रतिपादन

ख::— आत्मा परमात्मा की एकता तथा अखंण्ता

ग:— ब्रह्मही सृष्टि का मूल स्त्रोत है ।

घ::— माया मिथ्या त्रिगुणात्मिका है ।

च::— ज्ञान अमृित सागर तुल्य है जिसके अभाव में मुक्ति असंभव है ।

सूफी की साधना जो कि भाव जगत की ही साधना है मानव जो प्राचीन काल से ही साधना में व्यस्त रहा है ज्ञान के प्रकाश में आत्मा परमात्मा के संबंध को अनेक भावों और प्रतीको से जोड़ता है । सृष्टि के विकास के साथ साथ यह अनुभव करता आया है कि मन की अपेक्षा बुद्धि श्रेष्ठ उससे भी श्रेष्ठ उसकी निष्काम भावना है । विवेक से भी श्रेष्ठवैराग्ञ है । वह परमात्मा की सत्ता में स्थित हो जाता है उसकी कोई अपनीं सत्ता नहीं रह गई ।104

गुजराती संतो में अखा ,प्रीतम,रवि साहब,तथा निरांत पर सूफी — साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखलाई देता है अखा नें अपनें "झूलणा" पदों में वेदांत तथा सूफी साधना की एकता प्रर्दशित की है । जिनमें 50प्रतिशत शब्द सूफियों की ही देन है । अखा नें सूफी मार्ग की चारों अवस्थाओं का वर्णन अपनीं रचना "झूलणा" के पदों में अपनें ढंग से किया है । 105: अखा की " जकड़ियों " में भी यही प्रभाव दिखलायी पड़ता है गुजरात के मर्मी संतो की विरहानुभूति में हमें जिस "प्रेम की पीर के दर्शन होते हैं वही सूफी कवियों की शैली में परिलक्षित होते हैं । सांख्य मत द्वैत का प्रतिपादक है । वह प्रकृति और पुरुष की भिन्नता मानकर दोनों के संबंध के कारण ही जगत की उत्पत्ति हुयी है इस तथ्य को भली भांति स्वीकारता है । प्रकृति सूक्ष्म और स्थूल जगत की उत्पादिकता है यही कारण है कि इसी सृष्टि में पर्दाथ उत्पन्न भी होते हैं और इसी में विलीन भी होजाते हैं । पुरुष मात्र इसका साक्षी अथवा दृष्टा है 106: वेदांतों नें अविद्या तथा माया के सिद्धान्तों का सर्मथन प्राप्त करते हुये सांख्य के जगत — उद्भव के कम को सामान्य परिर्वतनों के साथ स्वीकार किया है । संत में निहित गत्यातमक स्कुरण शक्ति ही चेतना का स्वरूप है । 107

गुजरात के संत कवियों में यद्यपि योग की कठोर साधना के प्रति विशेष रुची दिखलाई तो नहीं देती परंतु अष्टांगयोग ,प्रणवमंत्र ,2'षटचक' कुंडलिनीं ,ब्रह्मरन्ध्र ,सहस्त्रारकमल ,नाभिकमल, आदि का उल्लेख मिलता है । गणपत की षटचकलावणी भी इसी का प्रतीक है जिसमें कि कुंण्डलिनी के ब्रह्मरंध तक तक किस प्रकार पहुचा जा सकता है इसे भली भंति स्पष्ट किया जा सकता है । 108: गणपत राम के आत्मा को जल की मछली कहा गया है जो भाव रूपी सागर में गोते खाते–खाते भटक गई है । अखा के अनुसार ज्ञान एवं भक्ति के साथ – साथ योग की साधना भी अति आवश्यक है जो कि भक्ति का परं लक्ष्य है जिसमें साधक अपनें आप को भूलकर उस परंम तत्व से एकमय हो जाता है । 109:

तस्तो द्वारा रचित योग साधना के पद विपुल प्रमाण में मिलते हैं जिनमें इन्हों नें कहा है कि हठयोग साधन की शुद्धता को बचाये रखनें के वाली प्रकृया है । ऐसी गगन रूपी गुफा में गुरू के दुर्लभ दर्शन सुलभ हुये जहां–

–:: हंस दस्याये रहे च्युगे मुगता मोती ::–
–:: षटचक बंध के नरखे पुरण जोती ::– पद 20 ,41 ,42,

उस पद को प्राप्त करनें के लिये बाह्य किया कलापों की कोई आवश्यकता नहीं है शास्त्रोंका ज्ञान भी इसमें निरर्थक सिद्ध हो जाता है ।

–" ना हम नाचे ना हम गावें ,ना हम तान मिलावें ।
ना हम पोथी पढे पंडित की ,सहज अमर पद पावें ।।::–

संतो की इस प्रकार की साधना सुरत शब्द योग अथवा सहजता की ओर विशेषरूप से अभिमुख हुई है । जहां न जप–जाप एवं धारणा–ध्यान का कोई स्थान है बल्कि सहज ही " शब्द,ब्रह्मका प्रकाश दृष्टिगोचर होनें लगता है 110–

जिसनें सहज आनन्द को भोगा है एवं जिसकी गति में अकलता है वह नश्वर वस्तुयें जैसे तन,मन,धन, इत्यादि की कभी परवाह नहीं करता इस प्रकार का विशेष पुरुष ही,'' साहब का लाल''होनें में समर्थ हो सकता है 111–

सहज ही साधना में ''चित्त का निरोध '' होता है तभी चारों युग की साधनाये साधक के लिये की की महसूस होती हैं वह स्वयं ही अंतरघट में सद्‌गुरु साक्षत्कार कर लेता है । 112–

गुजरात के संतों पर निष्काम कर्मयोग –113 की स्पष्ट छाया दिखाई देती है जो कि उनकी रचनाओं से प्रमाणित होती हैं अखा की ,अखेगीता , रवि साहब की भाण गीता वस्तो की ''वस्तु गीता '' और प्रीतम्‌दास की सरस गीता इत्यादि

सैद्धान्तिक निरुपण में संतो के प्रमुख विषय निम्नानुसार रहे जैसे

अ::– ब्रह्मनिरुपण

आ::– जीव निरुपण

इ::–माया निरुपण

ई::– जगत निरुपण

अ:::– गुजरात के संतो का केवलाद्वैत ही सिद्धात है अर्थात उनकी दृष्टि में ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है । '' ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या,ब्रहैव नापर:: । आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म के स्वरुप एवं तथस्त लक्षण के आधार पर संतो नें सगुण ण्वं निर्गुण दोनों का महत्व स्वीकार किया है । राम और कृष्ण के सगुण रूप ही विराट निर्गुणपरक कल्पना कर ब्रह्मको इन्हों नें ऊँचे घाट का वासी कहा है इनका सगुण ब्रह्म निर्गुण ब्रह्म का विस्तार है ।

'' सगुन वेत्ता निर्गुण को है , निगुन पोषक सगुन को
ज्यों पुरुष की परछाहिं दर्पन,आनन समर्थो जन को ''

अखा कृत ब्रह्मलीला 3–3

वह तो निर्विकार ,निर्विकल्प ,निरुपाधिक ,अखंडित ,अविनाशी ,निरधार ,निर्गुण,निराकार ,नित्य ,तथा निजआनंद है । प्रीतम्‌ नें उसे शुद्ध, चैतन्य ,साक्षी ,प्रमाता , प्रमाण और प्रमेती आदि पंच नामों से अभिहित किया है ।114::

सब उसी में समाये हुये हैं किन्तु फिर भी वह सर्वातीत हैं |115–प्रीतम् के अनुसार ब्रह्मउस समुद्र के समान है जो प्रलय काल में पूर्णतः भरा होता है । 116::सागर में बुदबुदे के समान सृष्टि जन्म लेती है जिस प्रकार सिन्धु में अनेंको लहरें उठती हैं उसी तरह ब्रह्म में सारा संसार जन्म लेता है 117::–पानीं के बीच जैसे कोई अन्तराय नहीं होता , ब्योम के बीच जैसे कोई झाड़ी नहीं रोपी जा सकती वैसे ही ब्रह्म भी निर आवरण है । 118'– अखा नें ब्रह्म को "अणलिंगी " कहा है क्यों कि न वह स्त्री है ,न पुरुष एवं न ही नपुंसक ही है । वह अजन्मा है ।जिसके न कोई आगे न कोई पीछे है और न कोई बीच में हैं बल्कि अपनें आप में वह स्वतंत्र है ।119– उसका स्वरुप भी अनिर्वचनीय है । वेदों में इसलिये उसे नेति ,नेति कहकर पुकारा गया है । शब्दातीत ब्रह्म के निरुपण में श्रुति की वाणी भी कम पड़ती है क्यों उसे "महापद "की बात कुछ निराली है 120–

जिनके परिणाम स्वरुप अखा भी इसे अनुभवमन्य बताते हैं । अनुभव ही एक ऐसा साधन है जिसके बलबूते पर अकल, अरुपी , तथा अनिर्वचनीय तत्व का साक्षत्कार किया जा सकता है । तीर्थ ,ब्रत, जपतप, पूजा पाठ, इत्यादि सभी कर्मकाण्डों के बीच उनकी दृष्टि जिस सत्य को भेद सकती है वह शस्त्रज्ञान ,ध्यान , धारणा आदि सभी से परे है –121। निरांत नें इसी को " बिन रसना रा मीठा " कहा है 122। ऐसा साहेब सभी के घट में विराजमान हैं। वो अखंड सर्वत्र हैं जहां "अनमे " की आवाज हो रही है । 123– निरांत इसी ब्रह्म की साधना को भार पूर्वक दर्शाते हुये कहते हैं कि नाम रुपी नौका में बैठनें वाला साधक पलभर में भवसागर के पार उतर जाता है ।124– नाम की साधना वस्तुतः निरंजन की साधना से भी अधिक प्रभावशाली है ।125– अखा के कथनानुसार जो भी दिखायी पड़ता है वह उस ब्रह्म की ही सत्ता है । उसे कोई आत्मा का भेदी ज्ञानी पुरुषही सर्वत्र सत्ता का साक्षात्कार कर सकता है ।126–

दादू नें तीनों लोक ,पांच सौ गुणों और वन में विचरण करनें वाले समस्त पशु पक्षियों को अपना गुरु माना है क्यों कि ब्रह्म नो सर्वत्र विद्यमान है । 127– वह ऐसा दिया है जो तेज पुंज है जिसका प्रकाश दसों दिशाओं में फेल रहा है मगर उस दिये में न तो बाती की जरुरत पड़ती है न तेल की । 128–

निरांत भी इस बात का सर्मथन करते हुये कहते हैं कि वह साहेब सर्वत्र व्याप्त है वही सर्वत्र व्याप्त है वही प्रत्येक घट भी वास करता है जिस कारण हम बोलनें में सक्षम हो पाते हैं । 129–

बापू के अनुसार उस "नटवर " के भेद को तो शिव सनकादि भी नहीं जान सके । कर्ता धर्ता एक वही है जो चौरासी रुप धारण करता है । 130–

आ::– अखा व छोटम दोनों नें ही ब्रह्म को शिव, की संज्ञा से अभिभूत किया है । साथ ही साथ जीव संबंधी उसकी अभिन्नता प्रकट की है 131–छोटम के कथनानुसार जीव यूं ही तुरीय पद की प्राप्ति करता है तो वह शिव,हो जाता है वहां द्वैतावास का कोइ स्थान नहीं रहता जीव और शिव का मिलन समुद्र में सैधव की भांति होता है । छोटम के अनुसार शिव को प्राप्त करनें से पूर्व जीव की प्राप्ति अति आवश्यक है । जीव की प्राप्ति अति आवश्यक हैं । जीव को कोइ वायु रुप मानता है , तो कोई तेज रूप । कोई उसे अणु रुप बताता है तो कोई अंगुष्ठ मात्र –132 । अखा की ही भांति छोटम जीव को जड़ चेतन के बीच की कल्पना मांत्र बताते हैं । 133– प्रीतम् के मतानुसार जिस प्रकार आकाश का कभी नाश संभव नहीं उसी प्रकार आत्मा भी अखंड एवं अद्वैत है । आक के रस में जैसे अभ्र छुपा रहता है , तरुवर में जैसे पत्ते लगते हैं , ठीक उसी प्रकार ब्रह्म में भी देंह का आवागमन लगा रहता है ब्रह्म अनादि तथा अटल है , अरूप एवं अछेद है अग्नि के अंबार से जिस तरह अनेक दीप प्रकट होते हैं उसी तरह ब्रह्म से भी संसार के समस्त जीव जन्म लेते हैं । 134– अखा आत्मा को चंद्रमा कीं उपमा देते हुये कहते हैं कि जो अपनीं ज्योत्सना से अरण्य वीथिका , मंदिरों एवं उसके शिखरों को ज्योर्तिमय कर रही है ।135– दादू नें इसी एक 'प्रकाश

'नूर' को ब्रह्म तथा जीव का मेल बताया है । रस में से अगर रस निकाल लिया जाये और उसमें से ज्योति प्रकट हो ठीक उसी भांति ब्रह्म तथा जीव का यह (मेला) मिलन लगा ही रहता है । 136– जीव और ब्रह्म का संबंध अग्नि से उठनें वाली चिनगारियों की भांति है । वस्ता के मतानुसार जीव और ब्रह्म का संबंध अरस–परस का है ।137– अहं के कारण ही ये अपनें को पूर्ण से अलग मानता है । अखा के अनुसार इसे कांच के मंदिर में कुत्ते कीसी स्थिति के समान बताया गया हैं 138 अखा के मता नुसार 'अहं ' 'गैन' और आत्मा ऐन है । यहां गैन –गैन जाता है और ऐन –ऐन (अपनें आप) स्वतः ही होती है इनका विस्तार तो अखा भी नहीं कर पाये 139: अहं को त्यागे बिना आत्मा सहजता को भोग पनें में सक्षम् नहीं हो पाती । 140:: अखा नें इसके नाश के लिये भक्ति भजन और वैराग्य को श्रेष्ठ साधन बताया है ।

संक्षेप में गुजरात के सभी ज्ञान वादी संतो नें आत्मा तथा परमात्मा की अखण्डता की ओर ही इशारा किया है जिसे आंतरिक चक्षुओं से ही निहारा जा सकता है ।

माया निरुपण::––

ब्रह्म के तुल्य माया भी अजन्मी है लेकिन वह ब्रह्म के समान सत्य नहीं है उसमें से अर्जित जगत भी मिथ्या है यह एक भ्रमणा है प्रीतम् के मतानुसार जीव पर माया का आवरण चढ़ा हुआ है जो कि आठ प्रकार के आवरण हैं । जैसे ,पृथ्वी ,पानीं ,तेज, वायु, गगन, गुण,अहंकार मन इत्यादि। इस माया को प्रीतम् ने अविद्या, अव्याकृत , अक्षर ,अज्ञान , प्रवृति ,अजा, छेत्र, धाम, प्रधान, आदि नामों से अभिहित किया गया है 141– छोटम नें तो कल्पना मात्र को भी माया से भी अभिवाहित किया है 142– अखा के मतानुसार एकरंगी कांच की हरी ,पीली ,स्वेत, काली आदि अनेंक रंगो वाली इमसरत सुर्य के प्रकाश से परिभाषित होती हैं उसी तरह माया भी स्थिर है । 143–
ब्रह्म उनपर प्रकाश फेंकता है जिससे माया ब्रह्ममय हो जाती है एवं व्यष्टिरूप

ज़ीवात्मा का रुप धारण कर सत्य रूप ही प्रतीत होनें लगती है । जीव असत्य होते हुये भी मायावश अपना ब्यक्तिगत अधिकार मान बैठता है और उस ब्रह्म के भेद से अनभिज्ञ रहता है । 144– संतो ने वेदांत का अनुसरण करते हुये माया के विस्तार को विभिन्न रुपों में समझानें का प्रयत्न किया है । जैसे –1:स्वप्न सृष्टि 2–सज्जु सर्प न्याय 3–बिम्ब, प्रतिबिम्ब वाद 4– चामचुड़ा का खेल 5–पटवस्त्रएवं भात 6– मृत्तिका एवं घट 7– मन का बन्ध

1– यह सृष्टि स्वप्नवत है जैरे स्वप्न अवस्था में प्रेक्षक को लगता है कि सर्प नें उसे डस लिया है और मृत हो जानें के बावजूद वह अंत्येस्ठि कियाओं को देखता है जैसे ही उसकी वह स्वप्नावस्था भंग होती है वह जाग्रत अवस्था में आते ही उस स्वप्नावस्था रुपी भ्रम की वास्तविकता को महसूस करनें लगता है । अर्थात सृष्टि ध्यान में भ्रमण करनें वाले को जाग्रत अवस्था में स्वरुप ब्रह्मके साथ साक्षात्कार होते ही मिथ्यारुप एवं स्वप्नवत मात्र लगनें लगता है । 145–

2– सृष्टि भ्रमणामूलक है जैसे अँधेरे में रस्सी को देखकर रस्सी में सर्प का भ्रम होना 146– अखा के विचार अनुसार जहां रस्सी नहीं वहां सर्प का भय कैसा ?147 ।अर्थात जो जन्मा ही नहीं उसका होना असंभव है । छोटम नें इसी की तुलना नभ के श्यामलता तथा उसकी मृगमरीचिका से की है । 148–

3– विभिन्न प्रकार के पानीं के भरे पात्रों में समर्य का प्रतिबिम्ब जैसे विभिन्न रंगों में दिखलायी देता है किंतु यह विकार प्रतिबिम्ब में है न कि सूर्य में । इसी प्रकार सृष्टि भी ब्रह्म का माया में पड़ा हुआ प्रतिबिम्ब है जो कि माया का विकार है ब्रह्म का नहीं बीचिका ,लहरें ,तरंगें , बुदबुदें, भी पानीं के विकार हैं चन्द्र के नहीं 149–

4– जिस तरह एक नट पर्दे के पीछे खड़ा होकर कठपुतलियों को नचाता है एवं दीपक की सहायता से अनेंक दृश्यमान आकार खड़ा करता है ठीक उसी प्रकार से ब्रह्म भी इस संसार की चौरासी लक्ष जीव रुपी –150 पुतलियों को विभिन्न प्रकार से नचाता है । 3– इस खेल के अंत में सृष्टि सिमट जाती है परंतु ब्रह्म निर्विकार रहता है। 151।

5— अखा के मतानुसार संसार पट्टवस्त्र के तुल्य है और जीव भाव को ताना तथा संसार को बाना के रुप को संजोया है । 152— अखा उस ब्रह्म की तुलना वस्त्र के ''पोत'' से करते हैं कारण कि अगर 'पोत' ही न होगा तो 'भात' का निर्माण ही असंभव होगा ।

6—जगत का विस्तार भी विभिन्न नामों से हुआ है । नात रुप की भिन्नता केवल वाचा आरंभ का विकार है । 153—

7— मन ही सबका आरोपण हैं और मन के कारण ही मिथ्या जगत की सृष्टि होती है 154—वारक ,प्रेरक भी मन की ही उत्पत्ति है । मन ही सुनता और कहता है 155— अखा के मतानुसार इस काया और माया का चक्कर भी मन के ही कारण है । मन को मारना साधना पक्ष का प्रथम सोपान है । 156—

जगत निरुपण::—

द्वैतवादी ब्रह्म एवं जगत दोनों ही सत्ता को स्वीकार करते हैं जबकि अद्वैतवादी जगत को अध्यास , भ्रमणा, इत्यादि कह जगत की भिन्न प्रतीत माया अथवा तो अविद्या के कारण ही होती है सांख्य दर्शन के नरीखर वर्गीकरण के अनुसार सृष्टि सर्जन के 24 तत्व मूलभूत कारण हैं । 157— अखा के मतानुसार सृष्टि का उत्पादन कारण तथा पुरुष को निमित्त कारण बताया है । सत् ,रज्, और तम् , गुणों से युक्त प्रकृति ही माया का रुप है । इन तीनों गुणों व तत्वों से सम्लित ही विश्व का सृजन होता है अखा अपनीं 'अखेगीता' में जगत की रचना संबंधी समझाते हुये कहते हैं कि ' आमनें सामनें दो दर्पण रखे हो एवं जिस प्रकार अनन्त सृष्टि सर्जित होती है उसी तरह संसार और जगत की रचना संभव है । जगत व जीव मात्र ब्रह्म के विलास की व्याप्ति हैं ।158 अविकारी आकाश में विभिन्न प्रकार के बादल हमेंश छाये रहते हैं लेकिन आकाश उन बादलों के कारण नहीं है फिर भी बिना आकाश के बादलों का होना भी असंभव है ठीक उसी प्रकार ब्रह्म ईश्वर , जगत तथा जीव सभी का

अहेतुक कारण हैं । धीरा के कथनानुसार जगत की नामरुपात्मक सत्ता अज्ञान के कारण ही है । अज्ञान रुपी पर्दा फाश होते ही सत्यता का अनुभव होनें लगता है 159– जिस तरह आकाश से मूसलाधार पानीं की वर्षा होती है और वृक्षों में वह संचित होकर पत्र पुष्पादि का सौन्दर्य और भी निखर उठता है । वस्तुतः यह एकरुप जल ही है उसी प्रकार परिभाषित रहकर जगत भी ब्रह्ममय महसूस होनें लगता है 160– भेद मात्र रुप में है । सागर महराज नें भी जीव एवं ज़गत एवं जगन्नाथ को ब्रह्म की 'वृत्ति ' बताया है । यह जगत में ब्रह्म ही परिव्याप्त है ।

इस तरह संतो नें जीव तथा ब्रह्म की अखण्ड सत्ता के साथ साथ जगत को ब्रह्म की ही व्याप्ति बताकर ब्रह्म और जगत की अभिन्नता को उदित किया है ।

1, मराठी संतो का सामाजिक कार्य , डॉ. कोलते, पृ. 8–9

2, वही , पृ. 9

3, हिन्दी को मराठी संतों की देन , आ. विनय मोहन शर्मा

4, अ– मिडिवल मिसिट्सिजम ऑफ इण्डिया आ. क्षिति मोहनसेन पृ.98

ब– उत्तरी भारत की संत परम्परा , आ. परशुराम चतुर्बेदी , पृ 287

स– कबीर अने कबीर संप्रदाय , श्री किशन सिंह चावडा पृ ,141

5, देखिए – चरोतर सर्वसंग्रह , पृ. 822

6, कबिरा खडा बाजार में लिये लुकाठा हाथ ।

जो घर फूँकै आपना , चल हमारै साथ ।।**षष्ट**

7, भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरै उदास, तीरथ बडा कि तीरथ दास ।

–बीजक

8, कबीर संप्रदाय , किशनसिंह चावडा. , पृ. 140–41

9, कवि चरित ' भा. 1 – 2, पृ. 56 श्री के. का शास्त्री

10, एजन , पृ. 492

11, हि. का. नि. स. , पृ. 101

12, वही ,पृ. 101

13, आर्कियोलोजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग–2, पृ. 295–97

14, इन आउटलाइन ऑफ रिलीजियस लिटरेचर ऑफ इण्डिया ,फर्कुहर , पृ. 23

15. हि . नि. का. दा. ,पृ. 25

16, . भा. सं. परम्परा , पृ. 236—नवीन संस्करण ।

17, ही, पृ. 236 ।

18 , गुरू ग्रन्थ साहिब , रागु धनासरी , पृ. 695 ।

19, ा. का. वि.,पृ. 219

20, फा . गु. म. ग्र. ,पृ.311

21, ही ,पृ. 311

22, ही, पृ. 311

23, क्षयरस (भूमिका) आ. चन्द्रकुँवर सिंह , पृ. 78

24, गुजरात के संत , डॉ. अंबाशंकर नागर , संतवाणी अंक –9,पृ.3

25, देखिए ' संत दादू ' ,पृ. स. सा. व. का. अहमदावाद , पृ. 15–32

26, 'दादू और उनकी धर्म साधना' ,(पाटल संत सा .विशेषांक)

27, देखिए , – दादूदयाल की वानी, सुधाकर द्विवेदी , का . ना. प्र. स

28, उत्तर भारतीय संत परम्परा , परशुराम चतुर्बेदी, पृ. 413

29, हिन्दी साहित्य की भूमिका , पृ. 49

30 , हिन्दी निबन्ध काव्य और दादू , पृ. 38

31, उत्तर भारतीय संत परम्परा , पृ. 414

32, परमार्थ सोपान एपेन्डिक्स –1,पृ. 16

33, हन्दी साहित्य का इतिहास , आ. रामचन्द्र शुक्ल , पृ. 87

34, संत दादू , साखी–25, पृ. 51
35, कविता कौमुदी , भाग–2, पद– 10,पृ. 271
36, अखो एक अध्ययन , श्री उमाशंकर जोशी , पृ. 9
37, कवि चरित्र , श्री के का. शास्त्री , भाग –1–2, पृ. 584
38, गुजरात के हिन्दी ग्रन्थ , डॉ. अंबाशंकर नागर , पृ. 25
39 , देखिए, अखावाणी , पृ. 160
40 गुरुकीधा' , में गोकुलनाथ अखाकृत छप्पा
41, अखा जी की जकडी,पृ. 34
42, गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रन्थ , डॉ. अंबाशंकर नागर , पृ. 8
43, Uptothe biginning of the modern period many poets echoed the note of Akha -- -- Gujarat and its Literature , P. N. 236
44, Critical edition of Narhari 's Gayangeeta , Dr Suresh Joshi , M.S. U. Baroda .
45, कवि चरित्र , श्री के. का.शास्त्री , भाग 1–2 , पृ. 555
46, वही, पृ. 539
47, संतो नी वाणी, पृ. 1
48, हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय , डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल , पृ. 133–3
49, वही,पृ. 133
50, निजानंद चरितामृत ,पृ. 269
51, व्रजभूषण वृतान्त मुक्तावली , पृ. 32
52 य , डॉ हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदा . पीताम्बर दत्त बडथ्वाल , पृ. 133–34
53, मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियॉ , पृ. 83
54, प्राचीन काव्य सुधा , भाग –3 , छगनलाल विद्वाराम रावल , पृ. 241

55. वही, पृ. 241
56, वही, भाग–4, पृ. 283
57, निजानन्द चरितामृत ,पृ.311
58, डॉ हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदा . पीताम्बर दत्त बडथ्वाल , पृ. 134
59, सनंघ , पृ. 1–15
60, सुन्दर सागर भूमिका , पृ. 12
61, हिन्दी साहित्य का इतिहास , डॉ. धीरेन्द्र वर्मा , द्वितीय खण्ड , पृ. 584
62, देखिए , साकत संप्रदाय , दी . व. न. दे. मेहता , पृ. 115
63, मध्यकालीन गुजराती साहित्य , आ. अनन्तराय रावल , पृ.192
64, शाक्त संप्रदाय , पृ. 115
65, A Criticl edition of Narhari's Gayangeeta,Dr.Suresh Joshi,P.411-8,M.S.U.Baroda.
66, दृष्टव्य –गुजरात के प्रमुख संत कवि जीवन और कृतित्व , डॉ. रामकुमार गुप्त ,पृ.139
67, कवि चरित्र , के.का. शास्त्री , भाग, 1 –2, पृ. 547
68, गो. वा. , पृ. 113
69, गुजराती साहित्य नुं रेखादर्शन , श्री र . मो. जोटे , खण्ड ,1 , गुजरात विद्या सभा अहमदावाद , पृ. 183
70, भाषा और साहित्य , डॉ. मेनारिया राजस्थानी , पृ. 115
71, अध्यात्म भजन माला , भाग–2, पृ.173–74
72, कविचरित्र , श्री के. का.शास्त्री , भाग 1–2,
73, गुजराती साहित्य , अनंतराय रावल, पृ. 138
74, गबरी कीर्तनमाला, पृ. 29
75, देखिए , वही , पृ. 279

76, 'अक्षयरस' , पद–11, पृ. 98,
77, गबरी कीर्तनमाला , पद–531, पृ. 247
78 भजन सागर , भाग–1 , पद –5,पृ.353
79, कबीर संप्रदाय ,किशनसिंह चावड.ा, पृ. 167,
80, मध्यकालीन गुजराती साहित्य , आ. अन्नतराय रावल , पृ. 200
81, प्राचीन काव्य सुधा , सूरत निवासी 'भोजा' की एक रचना 'महिना ' (गुजराती) भाग –4, पृ. 288
82, देखिए पद संग्रह ' प्र संतराम मन्दिर नडि.याद, पृ. 127
83, देखिए , मिश्रबन्धु विनोद , भाग –2, पृ. 894
84, देखिए , नवीन काव्य – दोहन , पृ. 171–74
85, भजनिक काव्य संग्रह , पृ. 117
86, देखिए – गुजरात का हिन्दी साहित्य काव्य , पृ. 41
87, देखिए – फा. गु.स. भ. ग्र. , पृ. 331
88, प. प. सं. , पृ. 263
89, देखिए–'परिचित पद संग्रह ' ,पृ. 259–63
90, देखिए – फा. गु. म. ग्र. , पृ. 333
91, गुजरात की हिन्दी सेवा ' , पृ. 257
92, देखिए– मध्यकालीन गुजराती साहित्य , पृ. 192
93, जगजीवन विलास , 'सद्गुरू महिमा –खण्ड'
94, हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास , पृ. 530
95, Kev.Gujarati poetry ,P.3
96, हिन्दी की निर्गुण काव्य धारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि , डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत , पृ. 139
97 A history of Indian Philosphy Vol.1 P.423
98 कल्पयति आत्मनः आत्मानम आत्मा–मां. का. , 2–1

99, मनोदृश्यं इदं द्वैतं –मां. का. 3–31
100, अनादि मायया सुप्तोयद जीवः प्रबुध्यते , मां. का. 1–16
101 ऋगवेद – 1–164–10
102, योगसूत्र 1–27
103, ब्रह्म सूत्र भाष्य– 2 –1–11
104, सूफीमत साधना और साहित्य , पृ. 295
105, अखा कृत झूलणा –12
106, सांख्य कारिका , पृ. 19
107 छोटम की वाणी , ग्रन्थ– 1, पृ. 226
108 भजनसागर, पद 160–166, पृ. 233–235
109, 'अक्षयरस ',9–24
110, रवि भाण अने मोरार नी वााणी ,रवि साहव, पृ. 260
111, अखासाखी , लालच कौ अंग , –1
112, गुरूबावनी' संतराम कृत , पद संग्रह , पृ. 4–5
113, गीता –2–47
114, प्रीतम ब्रह्मस्वरूप वर्णन , –3
115, अखा , न. का. दो . पृ.475
116, प्रीतमदास साखी , पृ. 4
117, वही ,पृ. 5 ष्ट
118, वही, पृ.6
119, वही, पृ. 7
120, अः छ. पृ. 22
121, अखा की वाणी , पृ. 278
122, रूपअरूपी जे नरा , अनुभे अकल अरूप – संतप्रिया ,
123, निरान्त काव्य , भजन –114 पृ. 82,

124, वही , पृ. 145

125, वही , पृ. 2–11

126, वही पृ. 2–10

127, श्री अखा जी नी साखियो , सं. के. ए. ठाकर, पृ. 77–2–8

128, संत काव्य , पृ. 262

129, वही , पृ. ,263–67

130, निरांत काव्य , पृ. 82–114

131, प्राचीन काव्य माला ग्रन्थ , भाग–7, पृ. 25

132, अखा जी नी साखियो , (आत्ममपरिचा को अंग ,)

133, छोटम , छो. प. क., पृ. 311–20

134, छो. प. का., पृ. 311–13–14

135, प्रीतम साखी , 10–11

136, अखे गीता , 12–1

137, संत दादू, पृ. 39–46

138 वस्ताकृत साखी , अंग अरस परसको, –11

139, श्री अखा साखी –33–1

140, झूलणा , अक्षयरस, पृ. 68–69

141, श्री अखा साखी ,पृ. 30–31

142, प्रीतम वाणी , मायाअंग, पृ020

143, देखिए –छोटम कृत साखियॉ, माया को अंग , 5–1

144, तुलनीय "The one remains, the many changes and passed"heaven's light for ever shines,earth's shadow fly.;life like a dome of many coloured glass" .-Shelley.

145, अखे गीता , पृ. 19

146, अ .छ. पृ. 235

147, वही , पृ. 147

148, ब्रह्मलीला , 8–3

149, छो. सा. , माया को अंग, 5–22–13

150, अ. छ. , पृ. 161

151, अक्षयरस , झूलणा, पृ. 55

152, अ. छ. पृ. 151–52

153, वही, पृ. 224

154, वही, पृ.34

155, श्री अ. सा. 39–4

156, वही ,39 –5

157, निरान्त काव्य , पृ. 61

158, अ. छ. ,पृ. 59

159, अखे गीता कड.वा , 19–7–8

160, धीरोकृत कविता , पृ. 41,

161,. वही, पृ. 32